कविता संग्रह

हाशिए से अधिकार तक

डॉ. धीरज वणकर

हाशिये से अधिकार तक

हाशिये से अधिकार तक

(कविता संग्रह)

डॉ. धीरज वणकर

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

जीएलएस (सद्गुणा एवं बी.डी.) कॉलेज फॉर गर्ल्स,

लाल दरवाजा, अहमदाबाद - 380001

उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर

ISBN : 978-93-48802-81-1

पुस्तक	:	**हाशिये से अधिकार तक**
लेखक ©	:	**डॉ. धीरज वणकर**
संस्करण	:	प्रथम सन् 2025
सर्वाधिकार	:	लेखकाधीन
मूल्य	:	₹ 395.00 मात्र
प्रकाशक	:	**उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स** ए-685 कैनाल रोड, आवास विकास, हंसपुरम, नौबस्ता, कानपुर मोबा. - 8707662869 e-mail : utkarshpublishersknp@gmail.com
मुद्रक	:	ज्ञानोदय प्रिंटर्स, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	अम्बुज ग्राफिक्स, आर.के. नगर, कानपुर

HASIYE SE ADHIKAR TAK

Written by : ***Dr. Dhiraj Vankar***

Price : *Three Hundred Ninty Five Only*

समर्पण

प्रातः स्मरणीय ममतामयी माँ

स्व. रतन बहन

एवं

पूज्य पिताश्री

स्व. रेवाभाई

को सादर....

समाज को संदेश देती कविताएँ

- डॉ. सुशीला टाकभौरे

डॉ. धीरज वणकर जी अहमदाबाद गुजरात के जाने-माने हिन्दी और गुजराती भाषा के कवि-साहित्यकार हैं। आपकी गुजराती और हिन्दी भाषा में अनेक किताबें प्रकाशित हुई हैं। कविता, हाइकु, लघुकथा के साथ उनके समीक्षात्मक और सम्पादित ग्रन्थ भी प्रकाशित हुए हैं। दलित विमर्श, हिन्दी गुजराती दलित साहित्य के विविध संदर्भ, हिन्दी दलित एवं आदिवासी साहित्य – अंतरंग पड़ताल, हिन्दी दलित आत्मकथा विमर्श, दलित साहित्य संदर्भः सिद्धान्त और सृजन, अन्वीक्षा, गुजराती दलित साहित्य के विविध संदर्भ आदि उनके द्वारा लिखित बहुत ही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।

अनुवाद के क्षेत्र में भी आपने अनेक पुस्तकों का गुजराती से हिन्दी भाषा में अनुवाद कार्य किया है। आपका संपादन कार्य विपुल रुप में होने से साहित्य और समाज के लिए बहुत ही लाभकारी सिद्ध हो रहा है। आपके लेखन और संपादन कार्य के लिए आपको अनेक पुरस्कारों से समय-समय पर सम्मानित किया गया है। यह सब देखते हुए, आपके व्यक्तित्व और कृत्तित्व को, समाज के हित में एक मार्गदर्शक के रुप में समझ सकते हैं।

आप जीएलएस कॉलेज फॉर गर्ल्स के प्रोफेसर हैं। अपने कार्यकाल में आपने पी.एच.डी. शोध निर्देशक के रूप में अनेक शोधकार्य सम्पन्न करवाये हैं। दलित विमर्श और स्त्री विमर्श आपके विचारों के केन्द्र बिन्दु हैं। ऐसे शिक्षक, प्रोफेसर, साहित्यकार और समाज चिंतक का दृष्टिकोण सभी लोग सहज रूप में समझ सकते हैं।

डॉ. धीरज भाई वणकर जी के हिन्दी काव्य संग्रह – अब चुप थोड़े रहेंगे, हौसलों की उड़ान, घुटन भरी जिन्दगी, संघर्ष के आदी – काव्य संग्रह 2015 से 2022 के बीच छप चुके हैं। इन काव्य संग्रहों के शीर्षक से ज्ञात होता है कि कवि ने अपनी कविताओं में किन लोगों के लिए, कौन से भाव और विचारों को प्रस्तुत किया है।

कई कवि-साहित्यकार मनोरंजन के लिए और साहित्य सौन्दर्य से सुख सन्तोष के लिए लिखते हैं। मगर जो कवि साहित्यकार समाज के वंचित-दुःखी वर्ग के शुभ चिन्तक हैं, उनकी कलम से समाज को जाग्रत करने का संदेश ही साहित्य के माध्यम से दिया जाता है। डॉ. धीरज भाई वणकर जी की कविताओं में भी समाज के लिए समाज का हित चिंतन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। शोषित-पीड़ित वर्ग के लिए वे समाज को मानवता का संदेश देते हैं। स्त्री वर्ग के प्रति उनके मन में समता-समानता का भाव है।

डॉ.धीरज वणकर जी के प्रस्तुत काव्य संग्रह 'हाशिए से अधिकार तक' की कविताओं में विविधता है। उनकी कविता 'एक यक्ष प्रश्न' में किसानों की समस्याओं और उनकी पीड़ा का चित्रण है, वहीं 'नोचता रहा' कविता में शोषक वर्ग की प्रताड़नाओं का उल्लेख किया गया है। 'सड़क पर' कविता में कवि ने बताया है – "जब जब अन्याय अत्याचार होगा / तब तब देश के कोने कोने में / सड़क पर लोग उतरते रहेंगे।" इस तरह यहाँ विरोध-विद्रोह, क्रांति और आंदोलन का चित्रण किया गया है।

'थमेगा कब' कविता में कवि ने भ्रष्टाचार का कहर, पूंजीवाद का नंगा नाच और दलित अत्याचार की जानकारी दी है। दबंगों का आतंक, किसानों की आत्महत्या, घिनौनी राजनीति का छलकपट, दहेज, अंधविश्वास, स्त्री भ्रूणहत्या की बात भी कही है। इस तरह कवि की कविताओं में समाज की अनेक समस्याओं को खुले रूप में बताया गया है। 'बहादुर बेटियों' और 'भ्रूणहत्या' जैसी कविताओं में कवि ने स्त्री वर्ग को न्याय देने का संदेश दिया है। वे लड़कियों को सबलता का हौसला देते हैं, साथ ही भ्रूणहत्या का विरोध करते हैं। समाज में आजकल क्या क्या हो

रहा है, इस बात को भी अपनी कविता के माध्यम से उन्होंने समाज के सामने रखा है। 'हुँकार' कविता में वे 'नर्क' जैसा जीवन जीने वालों को मुक्ति के लिए हुँकार की आवाज उठाने की बात करते हैं, वहीं प्रकृति और पर्यावारण की भी चिन्ता करते हैं। 'धरा के आभूषण', 'गरजे बादल', 'हिल स्टेशन', 'बसन्त आया', 'पेड़ लगाएँ' आदि कविताएँ उनके प्रकृति प्रेम की प्रतीक हैं।

'मेरे भीम बाबा', 'मिशाल', 'संविधान रचयिता भीमराव', 'हाशिए से अधिकार तक', 'दलित साहित्य की जड़ें', 'डॉ.भीमराव अंबेडकर' जैसी कविताएँ बाबा साहब डॉ. अंबेडकर के प्रति कृतज्ञ भाव से लिखी कविताएँ हैं। उनके कारण हीं दलित वंचित समाज न्याय पा सका है। स्त्रियों को समानता का अधिकार डॉ.अंबेडकर के कारण ही मिल सका है। स्त्री-पुरुष भेद, जाति भेद, वर्ण भेद को मिटाने का संदेश डॉ.अंबेडकर जी ने दिया है।

'हाशिये से अधिकार तक' कविता दलित शोषित वर्ग के इतिहास को बाताती है। गाँव के बाहर बस्ती और सवर्णों की बेदर्दी का चित्रण इसका प्रमाण है। हिन्दू कोड बिल और संविधान में दिए लिखित कानून से स्त्रियों और वंचितों को समानता का अधिकार मिला है। इस कविता में कवि ने कहा है –"कई युगों के संघर्ष का जब आया पल / भीम बाबा ने दिया जीवन में अमूल्य हल।"

कवि ने अपनी कविता में मित्रता के महत्व को बताया है। उन्होंने 'हिन्दी भाषा को नमन' कविता में हिन्दी भाषा का महत्त्व बताया है। 'ममता की मूरत' में 'माँ' के विशेष चरित्र को गरिमापूर्ण रूप दिया है। 'याद है वे दिन' में पिता के चरित्र और उनके जीवन की कथा बताई है। 'जीवन है कट जायेगा' कविता में डॉ. धीरजभाई ने साहस और स्वतंत्रता का संदेश दिया है – "जीवन से हार कर यूँ न घबराना / चलते रहो, मंजिल को है पाना।" उनकी महत्त्वपूर्ण कविता है।

'कब तक बारिश का तांडव सहेंगे' कविता में कवि ने व्यंग्य कर सरकारी अधिकारी और नेताओं पर चोट की है। इसी तरह - 'रिश्ते टूटने

लगे' कविता में नई पीढ़ी के स्वभाव व्यवहार पर व्यंग्य किया है। 'नये शहर में' कविता में भी शहरी जीवन पर व्यंग्य किया है। 'मक्कार लोग' कविता में धूर्त लोगों पर व्यंग्य है। 'मुखौटाधारी इन्सान' कविता भी व्यंग्य का अच्छा उदाहरण है। यहाँ गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले इंसान और नेताओं पर व्यंग्य किया है। 'मैं शिक्षक हूँ' कविता में भी व्यंग्य द्वारा सच्चाई कही है।

'हाथरस पीड़ितों को न्याय दो' बहुत ही मार्मिक कविता है। समाज में घटी जधन्य सत्य घटना पर कवि के विचार यहाँ अंकित हैं। 'जीवन की राह', 'अनमोल जीवन', 'कर्म की सुगन्ध' जैसी कविताओं में जीवन को सही रूप में जीने का संदेश है। 'लौह पुरुष सरदार' कविता में उनके प्रति कृतज्ञता का भाव है। 'गुजरात वैभव' में अपने प्रान्त का सम्मान है।

इस तरह डॉ.धीरजभाई सभी कविताएँ उत्तम भावना और संदेश से परिपूर्ण हैं। साहित्य समाज को सही राह बताता है – यह बात कवि की कविताएँ पढ़ने के बाद सत्य प्रतीत होती है। जिस साहित्यकार की जैसी भावना और विचार होते हैं, उनके साहित्य में उसी दृष्टिकोण का चित्रण होता है। यहाँ कवि को हम मानवतावादी, न्यायप्रिय, समतावादी, विश्व बंधुत्व से परिपूर्ण कह सकते हैं। कवि ने अपने विचारों को कविताओं के रूप में समाज के सामने रखा है, यह उनका समाज के लिए विशिष्ट योगदान है। इस हेतु मैं उन्हें धन्यवाद देती हूँ साथ ही उनका अभिनन्दन करती हूँ कि वे इसी तरह समाज और साहित्य की सेवा करते हुए, साहित्य सृजन करते रहें। कवि डॉ.धीरज भाई वणकर जी के प्रति मेरी बहुत शुभकामनाएँ हैं। उनका सरल स्वभाव और उत्तम विचार उनके विशेष गुण हैं। वेदना-संवेदना के साथ लिखा गया उनका साहित्य सृजन, सबके लिए अनुकरणीय है। उनके भविष्य के लिए उनको शुभ आशीष हैं। धन्यवाद भाई धीरज वणकर जी!

दिनांकः 26-01-2025 डॉ. सुशीला टाकभौरे
नागपुर – 09588442591 09422548822

हाशिये से अधिकार तक : समसामयिक समस्याओं का दस्तावेज

डॉ. धीरज भाई वणकर जी की कविताओं को पढ़ना एक विरल अनुभव है, खासतौर पर "हाशिये से अधिकार तक"संग्रह की कविताओं से गुजरना तो अपने ही अंतरंग की यात्रा की तरह है। इस संग्रह की कविताओं को पढ़कर ऐसा लगता है जैसे हम भी अपनी ही संवेदनाओं को पढ़ रहे हैं। कविता, भावनाएँ और अनुभव सदैव परिवेश से प्रभावित होते हैं। इस प्रभाव के परिणामस्वरूप ही डॉ. धीरज जी ने अपने आस-पास और समाज में व्याप्त समस्याओं को अपनी कलम से वाणी दी है।

वणकर जी अपने ही तरह के कवि और साहित्यकार हैं, एक खास किस्म की निजता इनकी विशिष्टता है। श्री वणकर जी सिर्फ कवि या साहित्यकार ही नहीं बल्कि एक श्रमशील सर्जक भी हैं, जो अपनी कविताओं के लिए बड़े मनोयोग से शब्दों को चुनते हैं। कम शब्दों में अपनी बात स्पष्ट कर देना, "गागर में सागर" भरने जैसा है। डॉ. धीरज भाई वणकर जी इस कला में सिद्धहस्त हैं वे जानते हैं कि किस जगह कौन सा शब्द इस्तेमाल करना चाहिए, वे शब्दों की ताकत बख़ूबी पहचानते हैं उनका यह संग्रह संवेदना और सच्चाई की अनुभूति है, जिसमें निहायत ही गहन, पारदर्शी और मर्मस्पर्शी कविताएँ संकलित हैं। इन कविताओं को पढ़कर समाज का वास्तविक एवं यथार्थ चित्र हमारे सामने आता है। एक बार पढ़ने पर ही ये कविताएँ लम्बे समय तक हमारे दिलो-दिमाग में चलती रहती हैं, और एक साथ कई सारे सवाल खड़े कर देती है। कवि वणकर जी ने भी 'एक यक्ष प्रश्न' नामक कविता में किसान की करण

गाथा का बखान करते हुए, उसकी समस्याओं के समाधान हेतु प्रश्न पूछा है, साथ ही गुहार की है कि 'कब थमेगा' ये अत्याचार, भ्रष्टाचार का गोरखधंधा । क्या वास्तव में हम आजाद भारत के नागरिक हैं? क्योंकि स्वतंत्रता के बाद भी समाज में कुछ नहीं बदला, गिने-चुने मुट्ठी भर लोगों का जीवन तो खुशहाल हो गया किन्तु निम्न और मध्यवर्गीय लोगों का जीवन यथावत ही रहा। गरीब और असहाय जनता, शोषण की चक्की में पिसती-मरती रही, उसके पास न खाने को अन्न था, ना खुशहाल जीवन जीने का अधिकार। श्री वणकर जी समाज की इन सभी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक समस्याओं से परिचित थे इसलिए उन्होंने इन समस्त समसामयिक समस्याओं पर खुलकर अपनी लेखनी चलाई।

श्री वणकर जी ने इस संग्रह में देश और समाज की उन सभी ज्वलंत समस्याओं को दर्शाया है जिनकी वजह से देश और समाज खोखला व जर्जर होता जा रहा है। भ्रष्टाचार, किसान-मजदूर समस्या, कन्याभ्रूण हत्या और नारी विमर्श से जुड़े महत्त्वपूर्ण पहलू, बेटियों के कोमल सपने, गरीब और असहाय जनता के दुःख-तकलीफ इत्यादि से हमें इस संग्रह के माध्यम से अवगत करवाया है। देखा जाए तो एक तरह से ये 'कलम से क्रांति' है और यह क्रांति निर्भीक व्यक्तित्व वाला साहित्यकार ही कर सकता है और मुझे यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है कि डॉ. धीरज जी इसी प्रकार के व्यक्तित्व के धनी हैं।

अगर इस संग्रह की बात करें तो यह कविता संग्रह किसी एक थीम (विषय) को लेकर नहीं लिखा गया, इसमें जीवन के विविध प्रसंगों के दर्शन हमें होते हैं, जैसे- संघर्ष के अलावा इसमें हिल स्टेशन के आनंद के पल, प्रकृति की मनोरम छटा, मित्रता-दोस्ती जैसे आत्मीय संबंध, संविधान निर्माता, शोषकों-पीड़ितों के मसीहा डॉ. अम्बेडकर साहब इत्यादि पर एक साथ कलम चलाई गई है। यह संग्रह कलमकार डॉ. वणकर जी के विभिन्न अनुभवों का संयोजन है।

श्री वणकर जी के लेखन की एक खास बात यह भी है कि उन्होंने जो अनुभव किया उस पर बिना डर या संकोच के खुल कर लिखा। वर्तमान

समय में अपने अधिकारों से वंचित रहे मजदूर, किसान और निम्न तबके के लोगों की स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया। वे कल भी शोषित थे और आज भी शोषित हैं। इस स्थिति का यथार्थ चित्रण डॉ. धीरज जी ने मजदूर, पेट खातिर, गहरा दर्द है, हाशिये पर, तड़पता दर्द आदि कविताओं में किया है।

"मंडी के लुटेरे दलाल, किसानों के सपनों से करते खिलवाड़ ।"

वर्तमान समय में यह खिलवाड़ केवल गरीब, मजदूर, किसानों से ही नहीं अपितु देश के नव-युवकों के साथ भी उच्च स्तर पर हो रहा है। देश बेरोजगारी में लिपटा हुआ है, युवाओं का भविष्य अंधकारमय है। देश के पढ़े-लिखे युवकों को कोई रोजगार नहीं मिलता और वह बेरोजगारी के दलदल में फंसा रोता रहता है।

'बेकारी' नामक कविता इसका ज्वलंत दस्तावेज है-

"बेकारी ! बेकारी !
सिर्फ बेकारी।
रोजगार के दफ्तर में खड़ी,
विकट समस्या बेकारी!"

इस कविता संग्रह की एक खास बात यह है कि इसमें सभी तरह की कविताओं को शामिल किया है। कवि एक ओर तो शोषितों, पीड़ितों की आवाज बनकर आये हैं वहीं दूसरी ओर योग, शिक्षा, रोजगार, अधिकार, पर्यावरण, बारिश, दोस्ती-मित्रता, जैसे मानवीय रिश्तों, भाषा-प्रेम, राष्ट्रप्रेम, माँ और उसकी ममता इत्यादि सभी पहलुओं पर अपनी लेखनी चला कर इस प्रकार अपनी कवि प्रतिभा का परिचय दिया है। कवि बनकर वणकर जी कहीं तो शोषित-पीड़ित वर्ग के पक्षधर, उनके नायक हैं तो कहीं समाज सुधारक के रूप में नजर आ रहे हैं। इस दृष्टि से कवि वणकर जी की विचारधारा अम्बेडकरवादी प्रतीत हो रही है। संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं। हमारे लिए एक मिशाल है-

डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर,
एक नाम है मिशाल का,
एक विचार है समर्पण का,
एक प्रेरणा-स्रोत है
हर पीढ़ी के उत्थान का।"

कवि वणकर जी की दृष्टि बहुत पैनी है, उन्होंने जीवन समाज के समग्र पहलुओं के साथ-साथ स्त्री और कन्या स्थिति पर भी अपनी लेखनी चलाई है। वे जानते हैं कि किसी भी राष्ट्र और समाज का उत्थान तब ही हो सकता है जब वहाँ की नारी शक्ति का बराबर का सहयोग रहे।

कवि वणकर जी वर्तमान समय में स्त्री और 'कन्या-भ्रूण हत्या' से बहुत क्षुब्ध हैं। बेटी को जन्म से पहले ही मार दिया जाता है। कवि ऐसा न करने का संदेश देते हैं। एक बेटी की पुकार को सहेजते हुए वे लिखते हैं कि-

भ्रूण-हत्या ! भ्रूण-हत्या !/बड़ी निगोड़ी हवा चली है,
होती हर रोज,/ अनगिनत भ्रूण-हत्या ।"

कवि वणकर जी बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी हैं उनके लेखन में जीवन के विभिन्न रंगों की अभिव्यक्ति है। वे एक सच्चे देशभक्त, राष्ट्रवादी कवि हैं जिन्हें अपने राष्ट्र, संस्कृति, वैभव से प्रेम है और यह प्रेम हमें उनकी "गुजरात वैभव " नामक कविता में देखने को मिलता है।

"गुजरात की आन-बान-शान है गुजरात वैभव,
15 नवम्बर 1992 में बोया बीज पल्लवित बत्तीस साल।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि कवि वणकर जी एक सिद्धहस्त कवि हैं जिनकी लेखनी में यथार्थ और सच्चाई की अनुभूति है। इनके लेखन में हमें जीवन के विविध रंगों से परिचय मिलता है।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगी कि इस संग्रह की पहली कविता 'एक यक्ष प्रश्न' से लेकर अंतिम कविता 'केतु छा गया' तक का पठन मुझे ऐसा लगा जैसे कवि वणकर जी जन-साधारण के कवि हैं। उनकी हर कविता में अनुभूति की सच्चाई है और उस सच्चाई से हमें अवगत कराने में वे पूरी तरह सफल रहे हैं।

संग्रह की सभी कविताएँ किसी न किसी रूप में हृदय की गहराइयों को स्पर्श करती हैं और हमें सोचने पर विवश कर देती है। इस अनुभूति को कुछ पृष्ठों में लिखना मेरे लिए सम्भव नहीं है। अतः मैं अपनी कलम को यहीं विराम देते हुए डॉ. धीरज वणकर जी को उनके इस संग्रह के लिए बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए यही कामना करती हूँ कि वे आगे ओर इसी प्रकार लिखते रहें।

माया पचेरवाल
व्याख्याता एवं शोधार्थी, जयपुर (राजस्थान)

अपनी बात

साहित्य समाज का आईना है। मानव की सामाजिक उन्नति में साहित्य का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। वह मानव जाति का पथ-प्रदर्शक भी है। साहित्य द्वारा समाज में जो परिवर्तन होता है, वह तलवार से नहीं होता। आज के युग में जितने भी वाद, विमर्श या आन्दोलन आये हैं- जैसे दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श, किसान विमर्श, अल्पसंख्यक, वृद्ध विमर्श आदि यह समाज का ही प्रभाव है। दरअसल काव्य न केवल अन्याय एवं शोषण के प्रति हमारे हृदय में विद्रोह पैदा करता है अपितु हमारे विचारों एवं भावनाओं का परिष्कार कर उन्हें उत्कृष्ट बनाकर मानव मात्र की मंगलकारी भावना की प्रेरणा देता है। प्रस्तुत संग्रह की कविताएँ समय के साथ लगातार संवाद करती हुई कविताएँ हैं। इन कविताओं का अनुभव जगत व्यापक एवं बहुस्तरीय है। दलित उत्पीड़न, नारी के अत्याचार, गरीबी, बेकारी, किसान की आत्महत्याएँ, पर्यावरण संकट देख-सुनकर मन में उपजे भावों को शब्दबद्ध करने का मैंने प्रयास किया है। मेरा मानना है कि मनुष्य-मनुष्य के बीच भाईचारा, समता एवं संबंधों की तरलता बनी रहे यह जरूरी है।

इस संग्रह के प्रकाशन की बेला पर मैं हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ - प्रसिद्ध महिला लेखिका डॉ. सुशीला टाकभौरे मैडम जी का जिन्होंने इस संग्रह की कविताओं पर समग्रतः समीक्षा लिखकर आप सभी के समक्ष पहुँचाया है। मैं आभार प्रकट करता हूँ माया पचरेवाल का

जिन्होंने इस संग्रह पर अपने गहन विचार लिखे। सबसे ज्यादा धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ मेरी जीवन संगिनी नयना एवं पुत्री पलक का जो मुझे लिखने का हौसला बढ़ाते रहे। मेरी रचनायात्रा में निरंतर संबल बढ़ाने वाले मदद करने वाले सुधीर को नहीं भूल सकता।

इस संकलन के कर्मठ एवं उत्साही प्रकाशक श्री पी.सी. चतुर्वेदी का भी आभार मानता हूँ जिनकी लगन से यह संग्रह सुंदर रूप से प्रकाशित हो सका है। मैं मित्रों विजय तिवारी, डॉ. दिलीप मेहरा, डॉ. हसमुख परमार, डॉ. धरमशी देसाई, डॉ. मोहन चावड़ा, डॉ. निशा रम्पाल, डॉ. राजेन्द्र परमार, प्रो. बाबूभाई पटेलिया, डॉ. अमित पटेल, डॉ. मालदे ओडदरा, डॉ. रश्मिकान्त ध्रुव, डॉ. जयंति बामनीया, डॉ. भूपेश गुप्ता, डॉ. प्रकाश डाभी और साहित्यकार मित्रों हरीश मंगलम्, अरविंद वेगड़ा, नटुभाई परमार, डॉ. कुसुम वियोगी, शेखर पवार की शुभकामनाओं के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

बसंत पंचमी - 2/2/2025 **- डॉ. धीरज वणकर**

अनुक्रमणिका

1.	एक यक्ष प्रश्न	19
2.	नोचते रहा	21
3.	सड़क पर	23
4.	परिवर्तन	25
5.	गहरा दर्द है	27
6.	हाशिये पर तड़प रहा हूँ मैं	29
7.	थमेगा कब!	31
8.	बहादूर बेटियां	33
9.	भ्रूण-हत्या	35
10.	इन दिनों	37
11.	मित्रता	39
12.	हुंकार	41
13.	धरा के आभूषण	43
14.	मिशाल	45
15.	हिन्दी भाषा को नमन	47
16.	गरजे बादल	49
17.	याद हैं वे दिन...	51
18.	ममता की मूरत है माता	53
19.	हिल स्टेशन	55
20.	संविधान रचयिता भीमराव	57
21.	बेटी का सपना	58
22.	बसंत आया	60
23.	जीवन है कट जायेगा	62
24.	कब तक बारिश का तांडव सहेंगे	64
25.	हाशिये से अधिकार तक	66
26.	देश प्रेम से बढ़कर और कुछ नहीं	68
27.	दलित साहित्य की जड़ें	70
28.	रिश्ते टूटने लगे	72
29.	मजदूर	74
30.	पेट खातिर	76
31.	कह दो	78
32.	डॉ.बाबासाहेब अम्बेड़कर	80
33.	पेड़ लगाएँ	82
34.	नये शहर में	84
35.	मक्कार लोग	86
36.	मुखौटाधारी इंसान	87
37.	जातिवाद	89
38.	अपने ही देश में	90
39.	झंखवाव का आभूषण	91
40.	योग से भगाए रोग	93
41.	हाथरस पीड़िता को न्याय दो!	95
42.	कर्म की सुगंध	97
43.	जीवन की राह	99
44.	अनमोल जीवन	101
45.	लौह पुरुष सरदार	103
46.	बेटियों की नैया पार लगाओ	105
47.	किसान के सपने	107
48.	दोस्ती	109
49.	फागुन आया रे!	111
50.	माटी पर मर मिटने वाले	114
51.	संघर्ष	115
52.	मेहनत करो	116
53.	नौकरी मिली संघर्ष के बाद	117
54.	गुरु महिमा	118
55.	बेकारी	120
56.	गुजरात वैभव	122
57.	उपेक्षित	124
58.	मैं शिक्षक हूँ	126
59.	जिंदगी का सफर	128
60.	केतु छा गया	130

1. एक यक्ष प्रश्न

किसान की गाथा
वाह की नहीं
किंतु! भारी आह की कथा है
करुण-क्रंदन की व्यथा है।

तन का वस्त्र
उजला नहीं है
मन मस्तिष्क में खेत से प्यार है
पूस की रात का संकट अपार है।

उनके श्रम का कोई तोल नहीं
बाजार में कोई मोल नहीं
अब की बार बजट में
किसानों पर कोई रहम नहीं।

पग पग पर मुसीबत पहाड़ सी,
हिंसक जानवरों से जूझता
जल में, थल में वह...
जान हथेली पर रखकर ।

इधर कुछ वर्षो से
किसानों के घरों में
खुदकुशी जारी है
भला तभी तो
गाँव-गाँव दहशत छाई है।

नहीं है, हल चलाना आम बात
चलो तुम्हीं बताओ !
एक यक्ष प्रश्न है
कब आएगा
किसानों की समस्या का हल?

●

2. नोचते रहा

कैलेन्डर के साथ-साथ
उम्र गुजरती गई कैसे
पता ही नहीं चलता
भागा-भागा रहता हूं
आपाधापी में।
मैंने वर्ष की गिनती छोड़ दी है
याद आता है वह दिन
उस दिन जब मैं आया था
नौकरी की तलाश में
बड़े शहर में।
बडी कंपनी में
कम्प्यूटर चलाने लगा
फटाफट...
किंतु माँ बाप
बीवी बच्चे के सपने पूरे करूँ तो कैसे!
कुछ कर्जा लिया
माँ की हठीली बीमारी के खातिर

बेदर्द सेठ ने
कभी ऊपर उठने ही न दिया
बस ! खून चूसता रहा
जोंक सा,
कई बरस हुए शहर में
एक एक दिन
तोंद वाला सेठ
नोच रहा
बेबस मुझे!
जिंदगी की आहें
न जाने किसी को
क्यों !सुनाई नहीं देती
पिता सही थे
शहर में कोई
किसी का नहीं होता...
केवल काम से मतलब
नकाब पहने हुए गिद्ध।
और ये गिद्ध...
आज भी जिंदा देखने को मिलते हैं
देश के हर शहर में
किसी न किसी रूप में।

●

3. सड़क पर

जब जब अन्याय, अत्याचार होगा
तब तब देश के कोने कोने में,
सड़क पर लोग उतरते रहेगें
नारेबाजी करते रहेगें
वी वोन्ट जस्टिस ।

कभी उना कांड पर
कभी किसान बिल पर
कभी मजबूर उतरे
कभी युवा उतरे बेकार
कभी पेपर लीक पर उतरे।

बस! सड़क पर डाक्टर उतरते रहे
कभी शहीद वीरों का परिवार
कभी निर्भया के न्याय हेतु
कभी रोहित वेमुला, हाथरस के खातिर।
होता कभी महंगाई भ्रष्टाचार भगाने सड़क जाम।

कभी गेम जोन के मृत मासूम बच्चों के लिए
कभी कोलकता के जघन्य कृत्य पर।
कभी एस.सी.एस.टी आरक्षण बचाने
कभी पुरानी पेन्शन योजना लागू कराने
बस! उतरते रहे, उतरते रहे ।

अब तो सड़क भी थर थर कांपने लगी
नये नये आंदोलन से ।
पुलिस की बेरहमी लाठीचार्ज से
किंतु! सत्ता तो तमाशा देखती,
सोती रही अक्सर।

●

4. परिवर्तन

युगों की पीड़ा किसे सुनाएँ,
दर्द हमारा कौन समझ पाए?
मानवता का पाठ पढ़ाओ,
नफरत छोड़, प्रेम सिखाओ।

खेत, नदी, जमीन खा गए,
स्वतंत्रता भी निगल गए।
हम किनारे खड़े सिसकते,
तुम महलों में बैठ चमकते।

हमारे पुरखे मरते-मरते,
बेगारी में जीवन झरते।
एक ही जीवन सबका है,
सोचो, क्यों ये धब्बा है?

अब घोड़ी पर चढ़ने दो,
ढोल-डीजे संग गढ़ने दो।
प्रेम-विवाह क्यों रोको भाई,
क्या ये इंसानियत नहीं निभाई?

जातिवाद का अंत करो,
नव युग का आरंभ करो।
डिलीट करो ये विष की बातें,
डाउनलोड हों मानवता की रातें।

कब तक ये जहर उगलोगे,
अपने भाई को छलोगे?
अब परिवर्तन लाना होगा,
नफरत को मिटाना होगा।

●

5. गहरा दर्द है

उदास हुआ मन गहरा दर्द है
शोषण का फैला गहरा गर्द है।

घर का चूल्हा जले तो कैसे जले !
समय पर वेतन नहीं श्रम का मूल्य कम है।

पहुँचे आसमां पे दाल आटा नमक के दाम,
बुझाए तो कैसे भूखे पेट की आग, आँखें नम हैं।

नित दिन बिलखते, बच्चे करते नई माँग
लाचार माँ-बाप, अब कहाँ दम है।

अक्सर भटकता रहा इधर-उधर
राहें भटक गई हैं, खोई मंजिल का गम है।

बीमारियों का घर बन गया हूँ मैं
इलाज कराए तो कैसे, जेब खाली है।

सदियों से शोषणखोरों से हम त्रस्त,
किंतु वे छप्पन भोग उड़ाने में मस्त हैं।

कहें तो क्या कहें दुर्दिनों से ग्रस्त लोग
पसीने के मूल्यों का क्षरण है इन दिनों।

●

6. हाशिये पर तड़प रहा हूँ मैं

हाशिये पर तड़प रहा हूँ मैं,
अपना मददगार, खुद बन गया हूँ मैं।

कई बार चूल्हा रोया, आँसू बहा रहा हूँ
रोटी का असली मोल समझ पाया हूँ मैं।

छल-प्रपंच के अंधेरे शिकंजें में, जकड़ा है तन-मन,
सूर्य प्रकाश में, खुद को समझ पाया हूँ मैं।

कहने को तो देश का, एक निवासी मैं,
पर हर कदम पर दबाया जाता हूँ मैं।

घर की चाह में दर-दर, भटकता यहाँ-वहाँ,
कौन जात का हो सुनकर, लौट आया हूँ मैं।

शम्बूक, एकलव्य की राख से, फिर खड़ा हुआ हूँ,
न्याय और अधिकार की, अब ललकार बन गया हूँ मैं।

जो भी हूँ, जैसा भी हूँ, छल से नफरत करता हूँ,
समता और बंधुता का, सच्चा चाहने वाला हूँ मैं।

बोल न पाऊं तो क्या, कलम ही मेरी जुबान है,
विषमता का कड़वा सत्य दुनिया में, बयां कर रहा हूँ मैं।

●

7. थमेगा कब!

थमेगा कब? ये
गोरखधंधा का खेल,
भ्रष्टाचार का कहर
पूंजीवाद का नंगा नाच ।
थमेगा कब ये?
जातिगत भेदभाव
दलित अत्याचार
बर्बर हिंसक हत्याकांड ।
थमेगा कब ! ये
दबंगों का आतंक
श्रमिकों का शोषण
किसानों का जीवन से मात देना।।
थमेगा कब! ये
नोट के बल वोट
घिनौनी राजनीति का छल
देश के गद्दार का खेल।

थमेगा कब! ये
पेपर फूट का कांड
युवा भविष्य से खिलवाड़
नौकरी में परिवारवाद ।
थमेगा कब ये!
दहेज का विकराल विष
अंधविश्वास का झाल
बैंकों के कई घोटाले।
कब थमेगा! ये
भ्रूण-हत्या का क्रंदन
बेटियों की नृशंस हत्या का पाप
कब थमेगा! ये, कब थमेगा?

●

8. बहादुर बेटियाँ

मत समझो खूद को अबला।
भारत देश की बहादुर बेटियाँ

सावित्रीबाई, मायावती का रूप हो तुम,
भूखे भेड़ियों को धूल चटा दो सबला।

अगर देखे कोई तुम्हें आँख ऊँची करके तो
महिषासुर सा संहार करके दिखा दो बेटियाँ।

लक्ष्मीबाई झलकारीबाई सी वीरांगना तुम
मर्दानी की महक फैला दो बेटियाँ।

घर-आंगन का उजियार भी तुम,
प्रकृति का अमूल्य उपहार है बेटियाँ।

अब तो प्लेन-ट्रेन चलाने लगी हो तुम
अपनी औकात का जज्बा दिखा दो बेटियाँ।

सुनीता विलियम्स, विनेश ने डंका बजाया विश्व में,
यकीनन हौसलों की तुम उड़ान हो बेटियाँ।

पराक्रम का प्रचंड पर्याय हो तुम
अब तो दुष्टों को सबक सिखाओ बेटियाँ।

भारत की बेटी कतई कम नहीं बेटे से,
अब तो सदियों की जंजीरें तोड़नी होगी बेटियाँ।

●

9. भ्रूण-हत्या

भ्रूण-हत्या! भ्रूण-हत्या
बड़ी निगोड़ी हवा चली है,
होती हररोज
अनगिनत भ्रूण-हत्या।

धरा पर आने से पहले
कच्ची कली को कुचल देते हैं
चारों ओर दर्द भरा
भ्रूण-हत्या का क्रंदन।

जब गाँव-गाँव गली-गली,
पुत्र मोह की अभिलाषाएँ बढ़ी!
तभी तो संसार में,
बेटियों पर शामत आई।

नारा देते यहाँ बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ, बेटी बढ़ावो,
फिर, भ्रूण हत्या पर क्यों उतर आते
बेटी तो घर की आन-बान, शान है।

न जाने कैसे
ममता को दफनाकर,
निज बेटी का गला घुटता
एक मां के हाथों ही क्यों?

कैसे भूल जाते हैं जग वाले
बेटी अनमोल कृति है इस संसार में
बेटी है तो बेटा है,
फिर भी क्यों करे संहार?

●

10. इन दिनों

इन दिनों क्या क्या होने लगा
बाप पर बेटा हाथ उठाने लगा।

इन दिनों नेता वादे वचन झूठे देने लगा
जनता के पैसे मेवा माखन खाने लगा।

इन दिनों भ्रष्टाचारी दांव बढ़ने लगा
अफसरों के इमान पर बड़ा सवाल।

इन दिनों पैसे के पीछे लोग हैं पागल
चंद रूपए के लिए भाई-भाई का गला घोंटता ।

इन दिनों रक्षक ही भक्षक बनने लगा
माँ के हाथों ही भ्रूण-हत्या होने लगी।

इन दिनों जंगल के जंगल कटने लगे
कंक्रीट के बड़े-बड़े जंगल खड़े होने लगे।

इन दिनों शिक्षा का व्यापारीकरण होने लगा
गरीब बच्चे बेचारे मजदूरी करने लगे।

इन दिनों दिन दहाड़े नारी नहीं सुरक्षित,
कलकत्ता बिहार मणिपुर थर थर काँपने लगा।

इन दिनों गोदामों में गेहूँ सड़ने लगा
बेचारे गरीब तड़प-तड़प के मरने लगे।

इन दिनों पति पत्नी का अहं टकराने लगा,
छोटी-छोटी बातों में कोर्ट के दरवाजे खटखटाने लगे।

●

11. मित्रता

है मित्रता
मेरी तेरी घनिष्ठ,
एक अटूट
निस्सीम
मित्रता।

है पावन-मित्रता
ना वासना
ना एषणा
ना कामना
सिर्फ निःस्वार्थ मित्रता।

है सच्ची मित्रता,
मेरी-तेरी चातक जैसी,
ना इसका अंत है
ना किसी बात का रंज है
खुशियों से भरे रंग की मित्रता।

है सराबोर मैं और तुम
अपनेपन का एहसास
हर पल कराती मित्रता
बिना कहे दर्द समझ लेती
कृष्ण सुदामा सी मित्रता।

है कुछ हटके निराली मित्रता
तेरी खुशी में मेरी खुशी
मैं दुखी तो तू दुखी
दुर्दिन में तन मन धन से साथ निभाती
सच में गजब की है हमारी मित्रता।

●

12. हुंकार

हुंकार है साथियों हुंकार
नरक सी जिंदगी से मुक्त होना हैं
आखिरकार...
बहुजन की नई पीढ़ी को बचाना है।

अब तो देर बहुत हो गई है
कठपुतलियाँ नहीं अब हम
संविधान है हमारे साथ
वर्ग चेतना की ज्वाला जगानी है।

कूद पड़ो मैदान में ज्वाला बनके
अमीरी-गरीबी की खाई मिटाने
पूंजीवाद को मुँहतोड़ जवाब देने,
स्वाभिमान का तेवर दिखाना है ।

कदम कदम पर हमें झुकाया
कदम कदम पर हमें ठुकराया
किंतु अब हम उन्हें पाठ पढ़ाएँगे
रोना धोना बंद करो।

समय की माँग है मेरे भाई
परिवर्तन, बस! परिवर्तन
चहुं ओर एक ही आवाज
आजाद पंछी सा उड़ना है इस जहान।

●

13. धरा के आभूषण

धरती के आभूषण हैं पेड़
जग के हितकारी हैं पेड़,
चलाते हैं जो कुल्हाड़ी
वह क्या जाने, क्या है पेड़।

बिना पेड़ सूनी सी लगती धरती
ऑक्सीजन का अनंत-भंडार पेड़
इतनी जब पेड़ महिमा है,
फिर,पेड क्यों आहें भरता है।

सुनते आए हैं वृक्ष लाए बारिश
फिर जंगल उजाड़ने का जुल्म क्यों करते,
पेड़ बिन धरा की शोभा नहीं
पेड़ बिन संसार की जान नहीं।

है शान इसी में वसुंधरा की
है प्राण यही तो धरती का
इससे ही तेरा रुतबा है ।
ये नहीं तो पंछी का ठिकाना कहाँ है!

है पेड़ सब की आन
फल फूल से वन उपवन छलकाते पेड़,
सूर्य की तपन सहके शीतल छाँह दे पेड़
फिर भी तुम क्यों करते प्रहार?

●

14. मिशाल

डॉ. बाबासाहब अंबेडकर
एक नाम है मिसाल का
एक विचार है समर्पण का
एक नाम है प्रेरणास्रोत का।

बाबासाहेब एक नाम है
आशाओं के संबल का
बहुजन के रक्षक का
मौन के संबल का।

बाबासाहेब एक विचार है
ऊँच-नीच के निर्मूलन का
समता बंधुता के संवाहक का
कर्तव्य के निर्वहन का।

बाबासाहेब एक संकल्प है
मनुवाद के संहार का
संविधान के संरक्षण का
अधिकारों के अनुबंध का।

बाबासाहेब एक नाम है
महाड़ सत्याग्रह के आह्वान का
अस्तित्व-अस्मिता के शंखनाद का
'मूकनायक' की आन बान शान का।

●

15. हिन्दी भाषा को नमन

नमन मेरी मधुर भाषा हिन्दी, नमन!
कोटि-कोटि कंठों की माला, उसका अभिनंदन।

मीडिया विज्ञापन की धड़कन, है दिल का स्पंदन,
लिखता हूँ, बोलता हूँ हिन्दी, वीणावादिनी का वंदन।

संतों की भव्य वाणी, जिसमें छिपा सच्चा ज्ञान,
संसार के कोने-कोने में, होता इसका गुणगान।

कबीर, रैदास, मीरां के भजन, हैं मन के मंथन,
जायसी, तुलसी, सूर, रसखान, पाये तुमसे यशवंदन।

भारतेन्दु की मुकरियाँ, अंधेर नगरी की पहचान,
गोदान, गबन, निर्मला, हैं ग्रंथ अनमोल समान।

कामायनी, कुरुक्षेत्र, चंद्रगुप्त, सब हैं इसकी शान,
जैसे लिखो, वैसे पढ़ो, यही है हिंदी की जान।

आचार्य शुक्ल, हजारीप्रसाद, डॉ. रामविलास के विचार,
उजागर किया आलोचना का, गहन चिंतन का संसार।

'अ' अनपढ़ से आरंभ, 'ज्ञ' ज्ञान से करती समापन,
विश्व पटल पर मेरी हिंदी, करती है गीत गुंजन।

●

16. गरजे बादल

उमड़-घुमड़ कर बादल गरजे
रिमझिम रिमझिम मेघा बरसे।
कुसुम पुलकित, हर पंखुरी हर्षित
घने बादलों में चपला चमके।

खुशियों में डूबे खेत-खलिहान
किसान नाचे, मेघा का गुणगान।
पंख फैलाकर नाच उठे वन मोर
टर-टर करती धुन में संग दे दादुर।

धरती ने ओढ़ी हरियाली की चादर
अंबर में बिखरी इंद्रधनुषी साज सजाकर।
तप्त धरा ने ली अंगड़ाई
मक्का, बाजरा, धान से खेत लहराए।

हर कोने में हरियाली का साम्राज्य
पुलकित हो उठी धरती, सजीव हर आकार।
वियोगिनी सी थी जो अवनी अब तक
प्रकृति की गोद में इठलाती, झूमती बारंबार।

धरा-गगन का यह अद्भुत मेल
मुस्कुराती धरती, बादलों का खेल।
हरित कांति से सजी प्रकृति प्यारी
सृष्टि के इस सौंदर्य में छुपी हरियाली की बारी।

●

17. याद हैं वे दिन....

याद हैं वे दिन, जब पिता थे खेतों में
बैल की तरह दौड़ते, पराए खेतों के पंक्तियों में।

हैवानों से डरे हुए, पसीना बहाते रहे
रात को लौटते, थकान भरे पैरों से कहते रहे।

"बेटा, पढ़-लिखकर कुछ बन जा,
इस नर्क से हमें तू छुड़ा जा।"

क्या कहूँ, क्या बताऊँ, कितना भी कहूँ
जितना लिखूँ, वह कभी पूरा न हो पाऊँ।

मैंने भी ठान लिया, कठोर परिश्रम करूँगा
बारह किलोमीटर कच्चे रास्ते, पैदल रोज चलूँगा।

हाईस्कूल की पढ़ाई में, धैर्य से काम लिया
फिर स्नातक-अनुस्नातक की राह, आणंद तक गया।

सौ किलोमीटर दूर, बिना पंखा, बिना पलंग
वल्लभ सेवाश्रम में रहा, स्वयंपाकी बन संग।

जुट गया पूरी ताकत से, पढ़ाई में दिन-रात
अव्वल आया स्नातक-अनुस्नातक में, बनी खबरें खास।

लेकिन पिता ना देख सके, मेरी ये तरक्की
बीमारी ने छीन लिया उन्हें, ना देख पाए मेरी नौकरी।

काश! आज वे होते, अहमदाबाद में साथ
मेरे हाथों को मिलती उनकी सेवा का साथ।

यकीन करो, मैं ऋणी हूँ, इस पसीने का
जो कुछ हूँ आज, उसमें समाई है उनकी मेहनत की सुगंध।

●

18. ममता की मूरत है माता

ममता की मूरत है माता
प्यार-दुलार का प्रतीक है माता।
शिशु के जीवन का आधार
हर दुख-सुख में साथ है माता।

भूखी खुद भले सो जाती,
पर बच्चों को प्रेम से खिलाती है माता।
पीयूष कलश से भरकर प्रेम
हर दर्द को भूल जाती है माता।

जल सी शांत, गंभीर और शीतल,
शिशु को अपने आँचल में सुलाती है माता।
कितनी भी हो पीड़ा, सहकर भी
दिल का टुकड़ा खुशी से पिलाती है माता।

निष्कपट, निश्छल, स्नेहमयी
हर बार सीने से लगा लेती है माता।
लालच से दूर, बस प्रेम ही प्रेम
दुनिया की सबसे बड़ी पूँजी है माता।

अश्रु खुद पीकर औरों को हंसाती
नभ सी विशाल, दिलेर है माता।
जीवन की हर कठिनाई में ढाल बनकर
सदा बच्चों के संग खड़ी रहती है माता।

●

19. हिल स्टेशन

ये हिल स्टेशन है न्यारा
नजारा इसका कुछ और प्यारा।
कल-कल बहते झरनों की धुन
हुस्न पहाड़ों का है कण-कण अनोखा।
बूँद-बूँद गिरती बारिश, बनती हसीन नजारा
जैसे स्वर्ग से उतरी हो कोई धारा।

बर्फ की चादर शोभा बढ़ाए
मंद-मंद बहती हवा का झोंका छू जाए।
ऊँचे शिखरों पर हिमाचल खड़ा,
कश्मीर की कली सी सुंदरता सजी है सदा।
कुल्लू-मनाली, शिमला की जन्नत न्यारी
ये हिमालय है हमारा, दुनिया से प्यारी।

प्रकृति यहाँ की अद्भुत और निराली
भँवरे की गुंजन और कलियों की लाली।
सूरज की लुकाछिपी, बादलों संग खेले
रात को चमकते तारे, हिल की शान मतवाली।

यहाँ आते कई घुमक्कड़ प्यारे
कुछ पियक्कड़ भी, जो हों नशे में सारे।
देशी-विदेशी टूरिस्टों की भीड़
और शूटिंग करने आते हीरो-हिरोइन मशहूर।

कोई चढ़े घोड़े पर, कोई ऊँट पर बैठे,
कोई जीप वे से सफर करे, तो कोई चट्टानें चढ़े।
वीडियो बनाते, लम्हों को जीते
यहाँ हर दृश्य में ज़िन्दगी की रौनक मिलते।

ये हिल स्टेशन है सुहाना, हर कोई इसका दीवाना।
हर तरफ़ दिखते नए नजारे।
टूरिस्ट झूमते, बादलों संग नाचते
इस जन्नत को देखकर मन में गीत गाते।

●

20. संविधान रचयिता भीमराव

भीमराव के जन्म की धूम, चहुँ ओर बहे तरंग
हुलसित मन, घर-घर उमंग, गूँजे भक्तों के संग।
धन्य-धन्य माता भीमाबाई, पिता सकपाल के आँगन
उमंगों से भरा रहा, वह पावन भीम का जन्मस्थान।

सुघर-सलोने साँवरे, दुख हरण भीमराव
दलितों के मसीहा बने, हृदय में बसी उनकी छाँव।
कलम से रचा इतिहास, सजे सूट-बूट में भीम
संविधान के रचयिता, बने देश के महान नींव।

टाई लगी गले में, तर्जनी करे इशारा
मनुस्मृति को जलाकर, किया बहुजनों का उद्धारा।
हे! महामानव, कोटि-कोटि नमन तुम्हें
जीवन समर्पित कर मिटाया अंधकार सदा के लिए।

जय-जय मेरे भीम बाबा, गाऊँ मैं अनंत गीत
चौदह अप्रैल को छाए घर-घर उल्लास और प्रीत।
आपकी शिक्षा और बलिदान, हमेशा अमर रहेगा
हर दिल में बसता है, आपका आदर्श महान रहेगा।

●

21. बेटी का सपना

उदास और रूठी हुई
मुँह लटकाए एक कोने में खड़ी
सिसक रही थी वह चुपचाप
मन में छिपाए अपनी बड़ी सी आग।

इच्छा थी कुछ बनकर दिखाने की
पर आँखों में नमी, और दिल में हताशा थी।
करे तो क्या करे, कहे तो किसे कहे
मँहगाई ने सपनों को यूँ ही कुचला है।

मजदूर और मजबूर पिता की जेब थी खाली
बेटी का सपना बना रह गया बस एक कहानी।
भोली-भाली मन में गहरी उदासी
किस्मत को गाली देती, है बेबस लाचारी।

मनहूस गरीबी पीछा छोड़ने का नाम नहीं लेती
आजादी के अमृत महोत्सव, पर कैसे ताली बजाएगी?
झुग्गी-झोपड़ियों में थाली भी खाली
पेट की आग बुझाने को कुछ नहीं मिलता कभी।

वे गरजते हैं भूखे पेट की लाचारी में
मुखौटाधारी कब तक बजाएँगे ताली आभारी में?
असली सवाल तो यह है दोस्तों
कब मिलेगी इनको जीने की असली रोशनी और खुशी?

●

22. बसंत आया

सुहाना बसंत आया, बसंत
मनभावन ऋतुराज संग लहराया।
अनोखा इसका हर अंदाज
वन-उपवन में खुशियों का शोर मचाया।

कोकिल ने उमंग से गाया
कूके कूक का मधुर राग सुनाया।
तितली रानी मस्ती में नाची
प्रकृति की लीला सब पर भारी।

रंग-बिरंगे फूलों से धरा सजी
पीली-पीली सरसों ने भी धूम मचाई।
कोमल कलियों ने मुस्कान बिखेरी
हर डाली पर भौरें हैं मँडराए।

महक उठी हवा भी इठलाती
वृद्धों को भी अपनी ओर लुभाती।
गीत गाओ, जीवन में बहार लाओ
वसंत आया, खुशियों का खजाना लाया।

दिलों में बसी है नई उमंग
वसंत ने जगाया हर दिल का रंग।
आओ मिलकर उत्सव मनाएँ
इस ऋतुराज का स्वागत करें, गीत सुनाएँ।

●

23. जीवन है कट जाएगा

जीवन से हार कर यूँ न घबराना,
चलते रहो, मंजिल को है पाना।
कठिन राहों पर जो भी जाएगा,
जीवन तो आखिर कट ही जाएगा।

परिश्रम करो, दिल से लगाओ,
एक दिन अपना मुकाम भी पाओ।
जो भी करेगा मन से मेहनत,
उसका परिणाम जरूर आएगा।

कोशिशें जो तुम जारी रखोगे,
सपनों को भी हकीकत करोगे।
विश्वास हो जब अपने बल पर,
जीवन तो आखिर कट ही जाएगा।

ऊँचाइयों तक पहुँचने में वक्त लगेगा,
पर हर कठिनाई का हल मिलेगा।
संकल्प हो जब अडिग तुम्हारा,
जीवन तो आखिर कट ही जाएगा।

मंजिल को पाने का रखो अरमान,
हौसलों से भर लो अपनी उड़ान।
धैर्य रखो सुख-दुख में भी,
जीवन की नैया पार हो जाएगी।

सच यही है, ना घबराना,
जीवन तो आखिर कट ही जाएगा।

●

24. कब तक बारिश का तांडव सहेंगे

कब होगा मॉनसून का प्लान सक्सेस?
कब खुलेंगे बड़ौदा में खुशियों के द्वार?
क्यों विश्वामित्री करती तांडव हर साल?
कैसे सजा हमें मिल रही है बार-बार?

कब तक मौन रहेंगे नगर के वासी?
पानी के कहर से कब तक सह पाएंगे हम?
नेता दिखते क्यों नहीं मेघ तांडव में?
कौन फैलाता भ्रष्टाचार का घना जाल हरदम?

संस्कारी नगरी कब तक डूबती रहेगी यूँ ही?
मगर के आतंक से डरती रहेगी अब कब तक?
महापौर बताओ, क्या बारिश का कोई हल नहीं?
कब तक सोते रहोगे ऐसे ही?

यहाँ वहाँ हर ओर पानी ही पानी,
फिर भी शासक क्यों निष्ठुर खड़े हैं?
बचाओ-बचाओ की चीखें सुनाई नहीं देतीं,
जवाब तो दो हमारी बदहाली के सवालों के।

अक्सर बारिश में शहर बनता जलसमुद्र,
फिर क्यों कोई ठोस कदम नहीं उठाते?
घोर कलयुग में आए सैनिक देवदूत बनकर,
जान की परवाह किए बिना हमें बचाते।

जाँबाजों को कोटि-कोटि वंदन है हमारा,
वे ही बनते इस अंधकार में उजियारा।
पर कब तक बारिश का तांडव सहेंगे हम,
समाधान की आस में कब तक रहेंगे हम?

●

25. हाशिये से अधिकार तक

कई युगों तक थे हम हाशिये पर, बस्ती थी उदास,
पिछड़े रोते रहे सदा, अधिकारों से वंचित थे खास।

जमींदारों ने बेदर्दी से करवाई बेगारी,
शिक्षा से रहे वंचित हम, बनी गरीबी हमारी।

पढ़ने-लिखने का हक सिर्फ ब्राह्मणों ने पाया,
दलितों की पीठ पर झाड़ू का साया छाया।

धर्म के पाखंड में फँसा हमें छलते रहे,
जाति का जहर मनुवादी भरते रहे।

आए मसीहा हमारे, कई युगों के बाद,
दलितों में आई खुशी, अरसे के बाद।

बाबा ने तोड़ी चुप्पी, जागे गाँव-गाँव,
युगों से सोई बस्ती ने छेड़ी नई तान।

संविधान बना, हक मिला पढ़ने का,
युगों के बाद मिला हमें सच्चा सपना।

हिन्दू कोड पर संसद में छिड़ी थी बहस,
गोलमेज में गरजा सिंह, बाबा की रही ध्वज।

कई युगों के संघर्ष का जब आया पल,
भीम बाबा ने दिया जीवन में अमूल्य हल।

●

26. देश प्रेम से बढ़कर और कुछ नहीं

हम भारत माँ के प्यारे वीर सपूत
हमारे लिए देश प्रेम से बढ़के कुछ नहीं
सर्दी हो या हो गर्मी या हो बारिश
हम भारत माँ के प्यारे सैनिक
देश प्रेम के रंग में ऐसे रंग जाते
हँसते-हँसते जान न्यौछावर कर जाते
हो आँधी-युद्ध महामारी परवाह किये बगैर
दिन रात कर्मठ योगी बनकर, चट्टान से खड़े
निरंतर प्रबल जोश से बॉर्डर पर बाज सी नज़र रखते
मातृभूमि की खातिर ...
सरहद पर शत्रुओं का नामोनिशान मिटा देते
अगर होता कोई मन भावन त्यौहार खास
हम हिन्दुस्तान के जाँबाज प्रहरी
सीमा पर चौकन्ना होकर जश्न मनाते साथ
अगर दुश्मन आँख ऊँची करके देखता
तो ललकार कर धूल चटा देते

सुनिए! भारत वासी आँधी सी चाल हमारी
देश के रंग में दुश्मन करे भंग तो
अखंड भारत बनाए रखने
अमन शांति सदैव बनी रहे इसलिए
हम जंग खेलते कतई पीछे न मुँह मोड़ते
हैं सैनिक होने का गर्व हमें
अटूट शक्ति बलिष्ठ भुजा
कदापि ना निराश होते
मातृभूमि की शान खातिर मरते दम तक दुश्मन से लड़ते
नाम लेकर भारत माता का ।
बंदूक की सन्न गोली चलाने वाले वीर सपूत हैं हम
यह मातृभूमि हमारी यह मातृभूमि
लक्ष्य हमारा एक ही होता है
देश प्रेम से बढ़कर और कुछ नहीं होता है
नये-नये इतिहास रचने वाले हम
हँसते हँसते जान तक कुर्बान कर देते।
यारों! देश से हमारा है अटूट नाता
उससे अलगाँव कहाँ?

●

27. दलित साहित्य की जड़ें

दलित साहित्य की जड़े
फैलती गई...फैलती गई
चेतना पर पकड़, जकड़न-
मजबूत होती गई ।
बाबासाहेब, ज्योतिबा फुले से प्रेरणा लेकर
हाशिये के करोड़ों लोगों की आह उजागर कर
बहुजनों की चुप्पी तोड़के-तटस्थ खड़ी रहीं
कलम को शस्त्र बनाकर ।
अब कतई नहीं आएंगे
धोखेबाजों की वाक्-जाल में
पाखंड अंधश्रध्दा, धोखाधड़ी
और मीठे-मीठे लुभावने नारों में
ये सब तो मिथ्या, मात्र ढोंग हैं
इससे बचने का मर्म सिखाने लगी।
प्रयोजन है इसका बड़ा उम्दा...
अस्तित्व-अस्मिता खातिर शंखनाद करके
समानता बंधुता भाईचारा
सर्वजन सुखाय सर्वजन हिताय को

स्थापित करना।
परिवर्तन इसकी पुकार है
जमीनी हकीकत इसकी हुँकार है
कविता,कहानी उपन्यास औ आत्मकथा के रूप में
मनुवादी शिकंजे तोड़ने
बेबाकी से बयाँ करने लगी ।
छुआछूत ऊँच-नीच का भेद मिटाने
पिछडों-वंचितों के अधिकार हेतु
अनूठा काम करके,
खुशी की किलकारियाँ बुलंद करने लगी।
कॉलेज हो या विश्वविद्यालय
पाठ्यक्रम हो या शोधकार्य
दलित साहित्य परचम फहराने लगा
मुख्यधारा के साहित्य से मुकाबला करने
चट्टान सा खड़ा, नजर आने लगा।
सामाजिक सरोकार के लिए
राह के रोड़े हटाने ।
कलम हाथ में लेकर
हो गये सयाने।।

●

28. रिश्ते टूटने लगे

मौजूदा दौर में
स्नेहिल रिश्ते
टूटने लगे
नयी पीढ़ी
विदेशी चमक-दमक में
इतनी सराबोर
कि फासले बढ़ने लगे।
जब भी देखो सोशल मीडिया में खोयी
नहीं रहना चाहती माँ-बाप के साथ
नहीं सुनते, कुछ तो माँ-बाप की बात
पड़े रहो चुपचाप कह कर दिल को दुखाने लगे।
अपनत्व की मधुर डोर से दूर
यौवनमद में मदमस्त....
दिवास्वप्न के मोह में
इच्छाएँ अनंत लिए
इधर-उधर उड़ान भरने लगे

किंतु ना संघर्ष से सरोकार है,
ना माँ-बाप से लगाव है
समझ नहीं आता
सुनो माँ-बाप की आँखों के तारे
पढ़ाया लिखाया परवरिश की भरपूर
दिनरात मेहनत करके
बुढ़ापे का सहारा न बनकर
उसी वृद्ध माँ-बाप को जिंदा
ढलती उम्र में....
जब होती तुम्हारी उष्मा की अति जरूरत
तब वृद्धाश्रम में क्यों छोड़ आते?
मुँह क्यों मोड़ जाते?

●

29. मजदूर

आए शहर
दर दर भटकते
रोजी-रोटी की तलाश में
मजदूर।
अनजान शहर में असहाय से
हो गए अपनों से दूर
कंपनी -कारखाने
औरों के घर बनाते
चौबीसों घंटे काम करते
सपनों को संजोए
साँसे गिनते
मशीन के पुर्जों से
निरंतर काम में रत रहते
ढोए बोझा, मेहनत करते
अतृप्त सा जीवन जीने को मजबूर
अस्तित्व भूल वह अपना

कदम कदम पर
पूँजीपतियों के हाथों-
रौंदे जाते हैं
अश्रुभरी आँखें उनकी
अभिशप्त जीवन जीते
मजदूर।
कभी तो अच्छे दिन आएँगे
बैठे इस आश में
वे चाहते शोषण से मुक्ति
पर दुर्भाग्य ऐसा उनका
मुक्ति से पहले ही
दम तोड़ने को मजबूर।
मेरे देश के मजदूर
अभागे मजदूर।

●

30. पेट खातिर

मंडी के लुटेरे दलाल
किसानों के सपनों से करते खिलवाड़
गर्मी हो तेज या बारिश की धार
चट्टान से खड़े दिनरात, खेत खलिहान
पापी पेट खातिर, जीते हर बार।

अतिवृष्टि हो या सूखा पड़े
सारे सपने चकनाचूर हो जाएँ
जब फसल अच्छी पकती
चेहरे पर खुशहाली छा जाए
किंतु बचे तो कैसे बचे,
जब मेहनत का फल भी हाथ न आए।

मार्केट के खेल से
कम दाम में छीन लें हक
जमीनी हकीकत कुछ और है
सपने सारे हो जाते ध्वस्त
हम खुद भूखे रहकर
औरों के पेट भरते हैं।

सुनो! देश के कर्णधारों
बीवी बच्चों परिवार के खातिर
अक्सर कर्ज तले दबे
गुजारा करें तो कैसे करें?
रोटी के लिए अनथक
जाड़े वाली काली रात में
संघर्ष करते रहते
धरती पुत्र हम।

नहीं सुनते आजकल कोई हमारी
आत्महत्या करने हुए मजबूर
अब तुम ही बताओ,
कैसे मनाएँ पर्व-त्यौहार?
जब दिलों में दर्द, और जीवन में हुजूम
कैसे आएगी खुशियों की धूम?

●

31. कह दो ....

कह दो उन देश के लुटेरे को
हमें जान से प्यारा है देश हमारा
कह दो तमाम वर्चस्ववादियों से
हम तो समता बंधुता के समर्थक हैं
कह दो घिनौनी राजनीति के ठेकेदारों से
उनकी चाल-जाल का दौर अब खत्म है।
कह दो तमाम भ्रष्ट अफसरों से
अब तुम्हारे लिए भी जेल की हवा का वक्त है
कह दो जाति-धर्म के नाम लड़ाने वालों से
हम तो सद्भाव के संवाहक हैं।
कह दो तमाम दबंगों से
हम भी ईंट का जवाब पत्थर से देने वाले हैं
कह दो तमाम हवसखोरों से
अब औरत खुद इज्जत की रक्षक है ।
कह दो उन बलात्कारियों से
जिसे समझते थे अबला नारी
बन चुकी है सबला

धरी रूप विकराल,
अब पापियों की संहारक है।
कह दो छली साहूकारों से,
जो उल्टा गणित चलाते रहे,
अब सीधी गिनती उन्हें सिखानी हैं।
कह दो पुत्र मोह में अंध भक्तों को
बेटी को बेटे से कतई कम ना समझे
अब तो नारी प्लेन-ट्रेन चलाने लगी हैं।
कह हो प्रतियोगिता परीक्षा के मुखिया को
अब जागरूक प्रत्याशी क्रान्ति वाले हैं।
कह दो देश के दुश्मनों से
सीमा पर तैनात सैनिक
दुश्मनों को मार गिराने वाले हैं
जुझेंगे अंतिम साँस तक पर झुकेंगे नहीं
मातृभूमि की खातिर मर मिटने वाले है।

●

32. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर

बाबासाहेब मसीहा, दलितों की ढाल,
आए समाज में, नई उम्मीद की चाल।
सोए हुए बहुजनों को जगाने लगे,
अधिकार की राह पर हमें चलाने लगे।

महामानव बने, उद्धारक महान,
हाशिए के लोगों को दिया सम्मान।
तड़पते पिछड़ों को दिलाया हक,
उनके लिए बने न्याय का सबक।

बाबासाहेब भारत रत्न, समता के प्रहरी,
बंधुता और स्वतंत्रता के बने ये ध्वजधारी।
संविधान लिखकर रचा इतिहास,
कमाल का काम, किया अद्भुत प्रयास।

नारी के उद्धारक, साहेब महान,
हिंदू कोड बिल लाए, नारी को दिया मान।
मंत्री पद को ठुकराया, बिना किसी संकोच,
नारी के सम्मान के लिए खड़े रहे सदा सोच।

विद्या व्यसंगी, अति मेधावी,
देश-विदेश में पढ़े, रहे ज्ञान के प्यासी।
अनेक डिग्रियों से सजी उनकी शान,
सिम्बोल ऑफ नॉलेज, बने वे महान।

चिंतक और प्रबुद्ध, साहेब थे बड़े,
शिक्षित बनो, संगठित बनो, संघर्ष करो कहे।
पढ़ाई का दरवाजा सबके लिए खोल दिया,
हर दिल में जागरूकता का दीप जलाया।

दीर्घदृष्टा थे, वेद-शास्त्र को ठुकराया,
मनुस्मृति को छोड़ा, नया रास्ता दिखाया।
शिक्षा को शेरनी का दूध कहा,
अंधविश्वास से लोगों को मुक्त कराया।

●

33. पेड़ लगाएँ

आओ मिलकर पेड़ लगाएँ,
धरती माँ की शान बढ़ाएँ।
हर घर आँगन वृक्ष हो प्यारा,
हरित बनाए ये जग सारा।
आम, नीम, पीपल हो बगिया,
फूलों से महके हर गलियाँ।
पेड़ लगाकर कर्तव्य निभाएँ,
हरियाली से जीवन सजाएँ।
धरा की शोभा ये पेड़ महान,
इनसे ही बने हमारा जहान।
काटोगे अगर इन जंगलों को,
नहीं मिलेगा फिर सुकून का स्थान।
फल-फूल, छाया और आहार,
पेड़ हमें देते हैं अपार उपहार।
शुद्ध हवा का संचार करें,
पेड़ हमें जीवन उपहार दें।
हर पेड़ एक नन्हा जीवन है,
इनसे ही धरती पर रौनक है।

वन्य जीवों का बसेरा यही,
पेड़ के बिना कोई ठिकाना नहीं।
आओ सब मिलकर संकल्प लें,
धरती को फिर से हरित बनाएँ।
प्रकृति की रक्षा हम सब करें,
हर आँगन को पेड़ों से सजाएँ।
पेड़ नहीं तो जीवन नहीं,
यह संदेश सबको देना है सही।
आओ मिलकर प्रयास करें,
धरा को फिर से हरा-भरा करें।
चलो साथ, अब हाथ बढ़ाएँ,
पेड़ लगाकर धरती को बचाएँ।
हर ओर हरियाली फैलाएँ,
और खुशियों का गीत गाएँ।

●

34. नये शहर में

ये दोस्त मेरे, इस नए शहर में
हर कोई यहाँ है दूर-दूर
सिर्फ काम की बातें होतीं
दिलों में नहीं बचा कोई सुरूर।

ये दोस्त मेरे, इस अजनबी जगह में
हर इंसान लगता है खोया - खोया सा
धड़कता है शहर दिन-रात
फिर भी हर कोई है सोया।

ये दोस्त मेरे, इस नए नगर में
सुबह से साँझ तक काम का जोर
आशा की ज्योत जलती है,
पर चैन नहीं मिलता कोई ठौर।

ये दोस्त मेरे, इन ऊँची इमारतों में
लोग रहते हैं आसमान छूते
पर दिलों की है इतनी दूरी,
रिश्ते लगते बस जूठे-मीठे।

ये दोस्त मेरे, इस भीड़ भरे शहर में
पेड़-पौधे सूख रहे हैं,
छाँव कहाँ अब मिले यहाँ,
जब हरियाली ही हैं रूठ रहे।

ये दोस्त मेरे, इस छल-कपट के नगर में
गोरखधंधों का है खेल बड़ा
होटलों की आड़ में छुपता,
सच का कोई नहीं यहाँ धड़ा।

ये दोस्त मेरे, इस धुएँ भरे जहाँ में
चूल्हे का धुआँ अब दिखता नहीं
रिक्शा-बस बाइक उड़ाते जहर,
सांसों में अब सुकून मिलता नहीं।

ये दोस्त मेरे, इस भयभीत शहर में
रावणों का आतंक है फैला
हर गली में सीता का हरण,
धरती का रंग हो गया पीला।

ये दोस्त मेरे, इस नए शहर की
दास्ताँ मैं अब क्या सुनाऊँ
यहाँ जिंदगी की कोई गारंटी नहीं,
हर दिन बस नई उलझन पाँऊ।

●

35. मक्कार लोग

यकीनन हैं वे धूर्त, मक्कार लोग,
जिन्होंने बिना मेहनत के पाया सब योग।
हाशिए के भोले-भाले इंसान को डराया,
जाति-धर्म का जाल बुनकर उन्हें सताया।

स्वर्ग-नर्क का भय दिखाकर उसे बहकाया,
चतुर्वर्ण व्यवस्था में नीचे धकेलाया।
हजारों सालों तक उसे पढ़ने न दिया,
अच्छा खाने-पहनने से भी दूर रखा।

बेगारी से उसे बुरी तरह से झुकाया,
छप्पन भोग खुद उड़ा, उसका सुख चैन छीन व्यकाया।
अगर होती कहीं चोरी या लूटपाट,
बेगुनाहों को कर देते सलाखों के साथ।

उठाते अगर आवाज, तो मार-पीट पर उतर आते,
चाहे जितनी कोशिश हो, अन्याय कभी न थम पाते।
पर अब नयी पीढ़ी ने अपनी आँखें खोली हैं,
सिंह गर्जना के साथ वे इतिहास बदलने चली हैं।

●

36. मुखौटाधारी इंसान

देखिए आज के मुखौटाधारी इंसान,
गिरगिट सा रंग बदलने का है चलन महान।
कहते हैं कुछ, करते हैं कुछ,
नेताओं की धोखेबाजी की असलियत देखिए ।

मधुर रिश्तों का हो गया हरण,
धन-दौलत के लालच में देखिए बेटों का वरण।
माँ-बाप लगते नयी पीढ़ी को निरर्थक बोझ,
चारों ओर फैले अकेलेपन का दर्द देखिए रोज।

गेस, पेट्रोल, डीजल की मँहगाई बढ़ती जाए,
मजदूर-गरीब के घर में रोटी की दिक्कत छाए।
शिक्षा का निजीकरण है विकराल देश में,
आम आदमी के बच्चे पढ़ें तो कैसे इस अंध कूप में?

सरकारी दफ्तरों में फैला भ्रष्टाचार,
अफसरों का व्यवहार भी है खराब।
कंपनी-फैक्ट्री के नाम पर जंगल उजड़े,
आदिवासी दर-दर भटके, यह दृश्य हुए खड़े।

पुत्र मोह में अंधा समाज दिखे,
जन्म से पहले कली को कुचलने के काम किए।
आज भी नारी सुरक्षित नहीं, देखिए ये हाल,
दिनदहाड़े बर्बर बलात्कार की चीखें सुन बेहाल।

●

37. जातिवाद

जातिवादी पेट से तेरा जन्म लेना
मुझे कतई आश्चर्य नहीं लगा
तेरा जातिवादी होना भी
मुझे कतई आश्चर्य नहीं हुआ
अगर तेरा जातिवाद तुझे,
श्रेष्ठता प्रदान करे....
इससे भी मुझे कुछ नहीं होता
हम प्रबुद्ध हैं बाबा साहब के विचारों से
बुद्ध की करुणा और प्रेम के संस्कारों से
लेकिन.....
हमारी समानता, हमारी समता से
हमारी स्वतंत्रता, तुम्हारी समरसता से
हमारी मानवता, हमारे बंधुत्व से
तेरा जातिवाद
डर क्यों रहा है?

●

38. अपने ही देश में

हम आदिम पुत्र, नींव वतन की
प्रकति से सीधा सरोकार रखने वाले
देश के हाथ और पैर वाले
मैदान से कभी नहीं भागते
हमारे साथ पाँव ताकतवर हैं
हमारी बलिष्ठ हैं भुजाएँ
चाहे खेती का काम हो
चाहे डामर का रोड बनाना हो
चाहे ऊँचे ऊँचे मकान बनाना हो
चाहे ईंट या चूने का भट्ठा हो
चाहे आपके भवन का रंग रोगन हो
उसमें हमारे पसीने की गंध समाई है
राष्ट्र के विकास के सच्चे सेवक हम
देश के लिए मर मिटने वाले
दुश्मनों के लिए जाँबाज हम
हजारों सालों से रहे चिर उपेक्षित
झोड़े-झटके झेलते अपने ही देश में।
आखिर क्यों?

●

39. झंखवाव का आभूषण

जीवन के रंगों-उमंगों की सफर में
प्रकृति की गोद में पली बढ़ी
समर्पित घर आँगन परिवार को
विद्याव्यासंगी, मधुरभाषी
स्वभाव से सबसे न्यारी
झंखवाव का आभूषण थी भानुबेन हमारी....
आनंदकुमार की आँखों का तारा
आस्था और एशा की जान थी भानु
संघर्ष पर संघर्ष किया पर कदापि हिंमत न हारी
प्रोफेसर बनके कुल गाँव का गौरव बढाया
जब भी कदम रखते हिंदी भवन में
सदैव मुख से टपकती मुस्कान
मित्रवत व्यवहार आपका, ज्यों हो फूलों का बाग
नागार्जुन पर पीएच.डी करके पाया खूब सम्मान
"छावनी' का अनुवाद करके पाठकों पे किया उपकार
मिलनसार स्वभाव की महक थी

हिंदी भाषा की परम सेवी-हितैषी
कर्तव्यनिष्ठ पाँच किताबें लिखकर
भानू तूने ज्ञान का प्रकाश प्रज्ज्वलित कर दिखाया
कैसे भूले अध्यापकगण करीबी का तो था नाता
युवाओं की प्रेरणापुंज पथदर्शक
अभिव्यक्ति में दिनकर...
छात्र प्रिय भानु की उर्जा से कई शिष्य हुए धन्य....
अचानक विधाता ने खेल ऐसा खेला
कि, 26 फरवरी मंगलवार के दिन अमंगल करके
हमारी भानुबेन को हमसे छीन लिया
अश्रुभीनी आँखें करबद्ध करता हूँ अंतस से प्रार्थना....
हे परम प्रज्ञ तथागत
तुम्हारे चरणों में शब्द साधक,
एक जीव आया है बन आराधक।

●

40. योग से भगाए रोग

योग से भगाए रोग
जब हर रोज करेंगे लोग
मन का दर्द तन का दर्द
मिट जाएगी योग से
भला जैसे खाना जरूरी है
वैसे योगा करना जरूरी है
करेंगे योग भारतवासी
तो जीवनचर्या बनेगी ऊर्जा भरी
योग के बिना कैसे रहेगी सेहत अच्छी
तनाव भरे दौर में आज
जिएँगे कैसे बिन योग...
योग वादी भारत क्यों
भोगवादी होने लगा
प्रण लेते हैं हम
हररोज करेंगे योगा-प्राणायाम।
अनुलोम विलोम करेंगे
और रहेंगे निरोगी

यारों योग से बढ़ती एकाग्रता
चेहरे पर है खुशी छलकती
हे! मेरे भारतवासी
योग का महत्व अनादिकाल से है
इसलिए 21 जून को मनाया जाताविश्वयोग दिवस.....
कोरोना काल में देखा हमने
योग बना सच में संजीवनी
योग के बिन सेहत
नहीं रहेगी ठीक
यारों योगा करो, योगा करो,
स्वास्थ से बढ़कर कुछ नहीं।

●

41. हाथरस पीड़िता को न्याय दो!

सच में संभलकर रहना
भूखे भेड़िए से
इक्कीसवीं सदी में भी
नारी नहीं सलामत
बाते करते हैं
नारी सशक्तीकरण की
किस मुँह से..
दबंगों का दबदबा तो देखो
हाथरस की पीड़िता मनीषा के साथ
जघन्य-क्रूर निष्ठुरता से गैंगरेप करके
नराधमों ने जबान काट ली
इतने से मन नहीं भरा तो
रीढ़ की हड्डी तोड़ दी।
और...
तंत्र लुच्चा तमाशा देखता रहा
शासक-प्रशासक का मूक रहना
मीडिया पर रोक लगाना

क्या! लोकतंत्र में ऐसा होता है?
हे! मेरे महान देश...
नारी तू नारायणी की, डींगे मारने वाले
क्यों भूल गये कि....
पीड़िता भी भारतीय बेटी थी
इसके भी कई अरमान थे
फर्क इतना ही था
कि, वह दलित थी
इसलिए दरिंदों ने
बलात्कार करके नोंच डाला
किंतु, एक राख आज भारी पड़ गई
जघन्य दुष्कृत्य के विरुद्ध
देश के कोने-कोने में पीड़िता का मुर्दा बोलने लगा
पीड़िता को न्याय दो,
नराधमों को फांसी दो।

●

42. कर्म की सुगंध

अच्छा कर्म चारों ओर
कीर्ति यश खूब दिलाता
सदैव आदमी को हँसाता
सुगंध उसकी दूर-दूर फैलाता।
अच्छा कर्म जिसने किया
भला फल भी उन्होंने अच्छा पाया
जिसने बोया पेड़ बबूल का
फिर आम कहाँ से पाया।
किया काम परोपकार का
उनकी जयजयकार होने लगी
कर्म ही मंजिल तक पहुँचाता
ढेरों खुशियाँ घर में लाता
कर्म का पुजारी कभी न रोता
आलसी आदमी भाग्य को कोसता
नन्हीं मकड़ी बार-बार गिरती
किंतु हिम्मत से जाल बना डालती

किया जिन्होंने भलाई का काम...
भूरि-भूरि जग में प्रशंसा पाई
और जिसने किया बुरा
उसका अंत भी बुरा,
रावण-दुर्योधन कंस भी न बच पाये
कर्म का यही तो कमाल है।

●

43. जीवन की राह

जीवन की ये राह
टेढ़ी-मेढ़ी होती है
यातना-पीड़ा से लबालब
मुसीबतों से भरी
इस राह पर...
कई पथिक चलते-चलते थक गये...
कोई रोने लगता
कोई कराहने लगता
कोई आपबीती सुनाने लगता
कोई जोर-जोर से चिल्लाता है
कोई भटक जाता है
कोई लक्ष्य से अटक जाता है
कोई दिशा भ्रमित हो जाता है
कोई भाग्य को कोसने लगता है
लेकिन जो निराशा को ठुकराकर
पहाड़ सा खड़ा रहता है

रुके या झुके बगैर
यकीनन...वह आदमी ही
मुस्कान चेहरे पर लिए
जीवन को रंगीन बना लेता है
सचमुच वही है महान
बाकी सभी हैं परेशान
आदमी जन्म से नहीं
कर्म से है महान!

●

44. अनमोल जीवन

मजा का यह जीवन मिला है
इसे जी भर जी लेना चाहिए
भला कल किसने देखा है
चलो घड़ी दो घड़ी,
प्रेम का खेल, खेल लेते हैं
एक दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहेंगे
धूप तो कभी छाँव का सामना करना चाहिए
क्योंकि इससे बहुत सीखना मिलता है
समय के साथ कदम मिलाना चाहिए
रूठे को प्रेम से मनाना चाहिए
मजा का यह जीवन मिला है
जिन्दादिली का खेलते रहना...
हार-जीत की फ्रिक बिना
पल-पल का सदुपयोग करना
गुजरा वक्त लौटकर कभी आता नहीं
कितने साल जिए वो मायने रखता नहीं

किंतु कैसा जिये यह सोचना चाहिए
समय भला कितना बुरा क्यों न हो
जीने का हौसला नहीं छोड़ना चाहिए
सपने साकार हो या न हो
किंतु कर्म जारी रखिए..
न थके कभी, न रुके कभी
एक-एक दिन है, बड़ा अनमोल
गुजरे हुए कल को भूल जाओ
और वर्तमान में खो जाओ
काल की लगाम थाम दो
कुछ करके संसार में छा जाओ।

●

45. लौहपुरुष सरदार

भारत की आन-बान-शान
सरदार वल्लभ भाई पटेल़
केवल एक मनुष्य नहीं थे
किन्तु प्रतीक थे
अखंड भारत निर्माता के
स्टेच्यू ऑफ यूनिटी के
सादगी और नम्रता के
लौहपुरुष के।
सरदार पटेल सिर्फ
झवेरभाई के सपूत ही नहीं थे
किंतु करमसद के कोहिनूर थे।
स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी सरदार
हिन्दी के बड़े हिमायती थे।
वल्लभाई वाकई....
भारत एकीकरण के सूत्रधार
बारडोली सत्याग्रह के बाद
'सरदार' कहलाये।

सरदार पटेल...
हिम्मतवान स्वाभिमान की मिसाल
त्याग की मूर्ति, युगमूर्ति
भारत की वंदनीय मूर्ति है।
सरदार साहब धन्य हो... धन्य हो...
सभी रजवाड़े एक करके
हमे पाठ पढ़ाया एकता का
सरदार शूरवीर से झुके नहीं
वफादार राष्ट्र भक्त मातृभूमि खातिर
स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ कर
जालिम-अंग्रेजों को झुकाया।
'सरदार' पटेल कालजयी
एक भारत के अगुआ.....
आज भारतवासी यकीनन
करते हैं भूरि-भूरि प्रशंसा
कोटि-कोटि प्रणाम।

●

46. बेटियों की नैया पार लगाओ

गाँव हो शहर
आज के भयावह माहौल में
विकराल रूप धारण कर लिया है दहेज ने
कि हर साल सैंकड़ों मासूम लड़कियाँ
सिसक-सिसककर आँखें मूँद लेती है
बेटी होना क्या कोई पाप है?
खुलेआम लाखों लिया जाता है
इसे तिलांजलि दे दो
और...
मत रखो दहेज की चाहत
दहेज की रटन कितनी भयानक है
जो मासूमों को खत्म कर देती है
दहेज से बचना हो तो
उठो-उठो आदमी
प्रण लेना पड़ेगा....
ना दहेज लेंगे ना दहेज देंगे

बदल देना पड़ेगा गाँव-गाँव
शहर-शहर का नजरिया।
दहेज के लोभियों तुम्हारे कारण
दहेज की बलिवेदी पर
हर साल.... मौत चढ़ी हैं अनगिनत बेटियाँ
अब तो जागो समय आ गया है
दकियानूसी को छोड़कर
बेटियों की नैया पार लगाओ।

●

47. किसान के सपने

भारत के गाँवों में
धरती पुत्र के खेतों में
सिर्फ फसलें नहीं उगती
सब्जी-भाजी ही नहीं उगती
इसमें उगता है
बहुत कुछ...
इसमें उगते हैं
किसान के सपने
अपने लड़के-लड़की के भविष्य
शादी-ब्याह के सपने।
इसमें उगते हैं
वर्तमान भविष्य के सपने
सेठ साहूकारों के कर्ज चुकाने के अरमान
तीज-त्यौहार पर बच्चों को
नये-कपड़े मिठाई दिलाने के सपने।
उसमें और भी बहुत कुछ उगता है

कच्चे खपरैले की जगह...
पक्का मकान बनाने के सपने
किंतु, ज्यादा बाढ़ आने से
या, सूखा पड़ने से
दलालों की साजिश से
अक्सर किसान के सपने
अधूरे ही रहते हैं
फिर भी वह नये साल में
नये सपने बोने लग जाता है
आखिर करे तो क्या करे?

●

48. दोस्ती

यारी कहो या दोस्ती
सच में होती है पक्की
जो अक्सर करती मस्ती रोशनी जुटाती
सच्ची दोस्ती....
कभी न करती चापलूसी
उदारता संस्कारों की खान होती
एक दूसरे के दिल की सुनती
मन की उदासी हरती
कथनी-करनी एक होती
वादे-वचन बखूबी निभाती
बिना बताये दर्द समझ लेती
अक्सर ये-
बुरे संग से दूर रहती
कतई ना झूठ का साथ देती
मन की अंदरुनी बात करती
दुष्ट की बोलती बंद कर देती

स्वार्थ से कोसों दूर रहती
कृष्ण-सुदामा जैसी।
बिना माँगे सबकुछ दे देती
एक दूसरे की मंगल कामना करती
सच्ची दोस्ती की तमन्ना होती
विपदा में मित्र चिंता न करे
मैं हूँ न।

●

49. फागुन आया रे!

फागुन मास आया रे संग होली लाया रे
लाया रे मनभावन होली लाया रे फागुन आया रे
रंगों का त्यौहार खुशियाँ झोली भर लाया रे
घर-घर खुशियाँ लाया रे फागुन आया रे
गांव-गांव-शहर होली के रंग रंगा जाता रे
राजा-रंक रंगे-चंगे होली खेलें आज रे
आम के पेड़ों पे मंजरी लाई रे होली आई रे
बुरा मत मानो होली है से गूंज उठे गगन रे
खजूर मीठी-मधुरी होली लाई रे,
फागुन गीत ढोल-मंजीरे के संग सभी गाये रे
मथुरा में बाजे ढोल-मृदंग रे....
कन्हैया संग मतवाली राधा भी थिरक रही रे..
फागुन फाग में सुध-बुध बिसराई रे..
भीना-भीना मन भीनी-भीनी पिचकारी रे
हाथ में पिचकारी ले बच्चे खेले होली
गली-गली चौबारे भंग मस्तों की टोली रे

अबीर-गुलाल के रंग अंतरमन को भिगा देती रे होली
अभिमानी हिरण्यकश्यप को जला के राख करे रे होली
होली आई रे.. होली आई रे सेनभगुंजरे...
देवर-भाभी का मनुहार होली रे
जाति धर्म का भेदभाव भूल के सब होली खेलें रे
ईर्ष्या वैमनस्य को मिटाये रे होली
छाई मस्ती की बहार रंगों की भर पिचकारी रे।
हर त्योहार मनायें हम भारत माँ लाल रे
पलाश के फूल से सज गई धरती मैया रे
खेलंगे जी भर आज हम होली रे....
फागुन मास आया रे संग होली लाया
लाया रे होली... लाया रे होली...
नई उमंगें नई तरंग होली लाई रे
चहुँ ओर रोमांच हर्ष सुनाई दे रे
घर-घर खुशहाली लाया रे फागुन
बच्चे-बूढ़े को रंग-बिरंगी बनाये रे फागुन
खजूर मीठी मधुरी होली लाई रे
राजा-रंक रंगे चंगे होली खेल रे आज
बुरा मत मानो होली है से गूँज उठे गली रे
हाथ में पिचकारी ले बच्चे खेलते होली रे
गाँव-कस्बा नगर होली के रंग रंगा जाता रे
अभिमानी हिरण्यकश्यप को जला के राख करे रे होली

रंगो का भरमार संग लाया रे फागुन आया
सभी फागुन गीत ढोल-मंजीरे साथ घंटों गाते रे..
हर्ष-उल्लास से भारतवर्ष होली खेले रे
हिन्दू-मुस्लिम सिख ईसाई खेले रे होली
भीना-भीना मन भीनी-भेवी पिचकारी रे
सदियों से सभी खेलते आये रे होली
रंग-बिरंगी पिचकारी बच्चों को मनभावन रे
नवदंपति के अरमाँ पूरा करती रे होली
शहर-शहर, गाँव-गाँव में होली है भाई होली
गली-गली चौबारों पर भंग मस्तों की टोली रे भाई
अबीर-गुलाल पिचकारी के रंगों अंतरमन को भिगा देती है
देखो रे देखो! रंग-बिरंगी गाल गुलाबी सजे रे
झूम-झूमकर फाग गाते रे...

●

50. माटी पर मर मिटने वाले

उनकी चाल - जाल का दौर अब ख़त्म है।
अब तुम्हारे लिए भी जेल की हवा का दौर है।
हम भी ईंट का जबाव पत्थर से देने वाले हैं।
अब औरत ख़ुद अपनी इज्जत की रक्षक है।
जो सदियों से शोषण करते आए हैं
अब शोषित उनके भक्षक हैं
अब गिनती उन्हें सिखानी है।
पुत्री को कम न समझें
अब नारी प्लेन-ट्रेन-चलाने वाली है।
छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ न करें
अब छात्र जागरूकता वाले हैं।
कह दो देश के दुश्मनों से
सीमा पर तैनात सैनिक
दुश्मनों को मार गिराने वाले हैं।
जो लड़ेंगे अंतिम साँस तक,
माटी पर मर मिटने वाले हैं।
माटी पर मर मिटने वाले हैं।।

●

51. संघर्ष

वह क्या समझ पाएगा संघर्ष क्या है
संघर्ष से मेरा घनीभूत नाता है।
संघर्ष से नाता है पुराना मेरा
हर कदम पर मिला इम्तिहान गहरा।
रोज़ कमाने निकला जबसे इस राह,
फिर किसी और का क्या रहा साथ।
पीछे मुड़कर देखना कभी सीखा नहीं,
साहूकार का हिसाब मैंने रखा ही नहीं।
उल्टा गणित चलाया जो बाप-दादाओं ने,
दर्द समझेगा कौन, जिन्हें लूटा फ़ज़ाओं ने।
पैर पसारें उतने ही जितनी चादर बिछी,
समझ गए थे हम, किस्मत है इसमें लिखी।
पेट की आग बुझाने का कैसे करें जतन,
सूद में खो गईं पीढ़ियाँ, यही रहा चलन।

●

52. मेहनत करो

साहिल पर खड़े हो सपने न देखा करो,
कुछ कर के दिखाओ, राहें न आंका करो।

चलो कठिन रस्तों पर, कदम बढ़ा के चलो,
मेहनत से मंज़िल को रंगीन बना के चलो।

हार माननी नहीं, जब तक सांस चले,
चलते रहना, यही तो ज़िंदगी का असल चले।

पहले संकल्प लो, फिर देखो ये हाल,
राह के काँटों को हटाओ, देखो कमाल।

चींटी भी फिसलती, बार-बार उठती है,
तभी तो उसकी मेहनत की गूंज सुनती है।

मोती यूँ ही नहीं मिलते, डूबना पड़ेगा,
समंदर की गहराई में सच्चा मोती मिलेगा।

मंज़िल नहीं मिलती आसानी से कभी,
रातों-रात कोई शहंशाह नहीं बनते सभी।

●

53. नौकरी मिली संघर्ष के बाद

नौकरी मिली है संघर्ष के बाद,
अब खोने का नहीं है तुझसे कोई वाद-विवाद।
चेहरे पर आई है मुस्कान की लहर,
जीवन धन्य हुआ है, तुझसे जुड़ गया हर पहर।
तू है सर्वस्व, मेरा अभिमान तुझे,
खुश हूँ दिल से, करता हूँ सलाम तुझे।
परिवार की खुशहाली में तेरा हाथ है,
ईमान से निभाऊँगा, न लगेगा कोई दाग है।
कभी नाराज़ न होना, तुझसे है मेरा आधार,
धोखा कैसे दूँ, जब तू है मेरे घर का संसार।
तुझसे ही सुखी है मेरा घर-द्वार,
कर्तव्यनिष्ठ रहूँगा, चाहे हों कितने भी भंवर।
तेरे बिना सब कुछ लगता है बेकार,
रिटायरमेंट तक साथ निभाना है, करना तुझसे प्यार।
भ्रष्टाचार से दूरी मेरी पक्की राह है,
क्योंकि, भटकते-अटकते अब मिली है तुझसे राह है।

●

54. गुरु महिमा

गुरु ज्ञान का भंडार है,
शिष्य का सच्चा तारणहार है।
गुरु गोविंद तक पहुंचने का मार्गदर्शक,
शिष्य पर करते हैं अनंत उपकार।

गुरु शिष्य का मंगलकारी है,
अखूट भंडार की खान है।
जीवन के हर मोड़ पर संबल है,
गुरु का स्थान सर्वोच्च महान है।

गुरु गूगल से भी श्रेष्ठ है,
समाज की सच्ची चमक है।
तमस का तेज़ है गुरु,
भारतीय संस्कृति की शान है।

गुरु सद्गुणों की खान है,
जग को जाग्रत कराता है।
शिष्य के भीतर नई उमंग भरता,
नवीन जोश का संचार करता है।

गुरु बिना ज्ञान नहीं,
संस्कारों का सिंचन करते, वही सच्चे शिक्षक कहलाते।
गुरु बिन नहीं मिटता संशय और भेद,
संसार में वह सत्य का सेतु बनाते।

अषाढ़ी पूर्णिमा के पावन पर्व पर,
द्रोण, वशिष्ठ, सांदीपनी और राधाकृष्णन के गुण गाते।
जिन गुरु-शिक्षकों ने हमें कुछ सिखाया,
आज उन्हें हृदयतल से कोटि-कोटि नमन करते।

●

55. बेकारी

बेकारी! बेकारी!
सिर्फ बेकारी!
रोजगार के दफ्तर में खड़ी,
विकट समस्या बेकारी!

तुम्हारी दास्तां हर घर में,
युवाओं के दिलों का गम तुम!
साँसों में घुली हुई तुम,
हर आहट में छिपी हुई तुम!

मात्र तुम! सिर्फ तुम!
हर कोने में फली-फूलती तुम!
स्नातक-अनुस्नात का अपमान तुम!
लाखों की भीड़ में गुमनाम तुम!

सिर्फ तेरे कारण!
भ्रष्टाचार, चोरी की समस्या बढ़ने लगी,
जब निकले रिक्त पदों का विज्ञापन,
तब लंबी कतारों में खड़ी तुम!

हाय रे बेकारी!
पेट की आग बुझाने को,
पुलिस की लाठियाँ खाते लोग,
सिर्फ तुम्हारी खातिर!

पलकें भीगी, बोझ उठाए,
डिग्रीधारक घूमते निराश,
कहो! जाएँ तो कहाँ जाएँ?

तेरी व्यथा की कथा है अनंत,
उम्मीद के साथ युवा करते आंदोलन,
बेदर्द सरकार!

●

56. गुजरात वैभव

गुजरात की आन-बान शान है गुजरात वैभव
15 नवंबर 1992 में बोया बीज पल्लवित बत्तीस
साल मनाने जा रहा है गुजरात वैभव
प्रसिद्ध अखबारों में स्तुत्य काम कर रहा गुजरात वैभव
पाठकों के दिल को जल्द जीत लिया तुने गुजरात वैभव
हिंदी का हिमायती भारत माता के माथे की
बिंदी का गुणगान करता गुजरात वैभव
हिंदी दिवस पर विशेषांक प्रसिद्ध करके
राष्ट्रभाषा का सम्मान बढ़ाता है गुजरात वैभव
समाचार के साथ साथ साहित्य, संस्कृति
तीज त्योहार की खुशियाँ बाँटता गुजरात वैभव
गांधी, सरदार, श्याम जी वर्मा, किनारीवाला शहीदवीरों
और सोमनाथ, अंबाजी, डाकोर, पावागढ़
अक्षरधाम, गिरनार जैसे तीर्थ यात्रा का कवरेज करके
भूरि भूरि प्रशंसा करता गुजरात वैभव
गुजरात के कोने कोने में गुजरात की,
संस्कृति संस्कार गरिमा का गुणगान करता गुजरात वैभव

अरे! पता ही नहीं चला और 32वें वर्ष में प्रवेश करके
तुने कमाल कर दिखाया गुजरात वैभव
प्रकाशन संपादन, सकुशल यही तो
तेरी विशिष्ट पहचान गुजरात वैभव
हररोज उठते ही प्रतीक्षा-उत्कंठा रहती गुजरात वैभव
हिंदी के प्रचार-प्रसार में समर्पित गुजरात वैभव
बत्तीसवें साल की प्रवेश बेला पर
कोटि कोटि बधाई बधाई, हो गुजरात वैभव
गरवी गुजरात का गौरव व सौरभ है गुजरात वैभव
दिनों दिन खूब फले फूले,
ऐसी मंगल कामना करता हूँ गुजरात वैभव...

●

57. उपेक्षित

उपेक्षित- चिर उपेक्षित
युगों-युगों से रहे पिछड़े
चहुँ ओर पशु से बदतर
जीने को किए मजबूर ।

अभी भी कर रही है वर्णव्यवस्था
प्रताड़ित-उत्पीड़ित,
चाहे गाँव हो चाहे शहर..
फैला है उसका जहर।

आक्रमण उनका बनता गया विकराल
हरतरफ मचा रहा है हाहाकार
ना घोड़ी पर चढ़ने देते
ना बंधुआ मजदूरी से मुक्ति देते।

उनको नहीं पसंद
हमारा आगे आना
उनको नहीं भाता,
कुर्सी पर हमारा बैठना।

हम भी इस देश के नागरिक हैं
बलिष्ठ भुजाओं वाले,
क्या कुर्सी और छप्पन भोग
उनकी जागीर है ?

वे रहे हमेशा केन्द्र में
हम रहे हाशिए में
किंतु अब हम,
चुप थोड़े रहेंगे

समय के साथ-साथ
भारतरत्न भीम के बंदे....
कलम-कागज सजने लगे हैं,
क्रांति का बिगुल फूंकने
अब सब उठने लगे हैं!

58. मैं शिक्षक हूँ

मैं शिक्षक हूँ, मुझे शिक्षक ही रहने दो,
ज्ञान के पथ पर मुझे आगे बढ़ने दो।
इधर-उधर के कामों में मत उलझाओ,
मुझे भारतीय संस्कृति सिखाने दो, यही सिखाओ।

बस्ती की गिनती में न भेजा करो,
मुझे कबीर की वाणी सुनाने दो।
'पूस की रात', 'कफन' को पढ़ाने दो,
बच्चों के संग कुछ सीखने का आनंद पाने दो।

वोटिंग गिनती में मुझे मत घसीटो,
गुणा-भागकार और शून्य का महत्व सिखाने दो।
शिवाजी, राणा, लक्ष्मीबाई का गौरव गाने दो,
मीरां, तुलसी, सूर की धुन में रम जाने दो।

नेता की ड्यूटी मुझे मत थमाओ,
गाँधी, सरदार की गाथा सुनाने दो।
मैं भीमराव का वंशज हूँ, इस पथ पर चलने दो,
ज्योतिबा सावित्री फुले की तरह शिक्षक बनने दो।

सस्ते अनाज की दुकान पर न भेजो मुझे,
कुपोषण के खतरे को बच्चों को समझाने दो।
पाठशाला में मेरा फर्ज निभाने दो,
बच्चों के संग जीवन के गीत गाने दो।

विज्ञान मेला है जहाँ मुझे भेजो,
होमी भाभा, कलाम का ज्ञान पाने दो।
अज्ञान का अंधकार दूर भगाने दो,
बच्चों की सुसुप्त शक्ति को जगाने दो।

ज्ञान की रोशनी से दुनिया संवारने दो,
बस मुझे शिक्षक बनकर, अपना कर्तव्य निभाने दो।

●

59. जिंदगी का सफर

खुशी कभी गम कभी
जिन्दगी का उसूल यही,
युग-युग से धरा पर
जिंदगी के रंग यही।

कभी अपार हर्ष
जीवन के कुछ वर्ष
कभी व्यथित-दुर्दिन अक्षुण्ण,
मिटत न मन की पीर।

चाह के पीछे पागल हुए लोग
आठों याम अनवरत
कभी चेहरे पर खुशियाँ,
कभी मायूसी लिए।

वैसे ही चाहत बुरी बला है
भला ! न तो इसका अंत है
वह तो नित नित खड़ी होती,
नये-नये रूप में अंतिम साँस तक।

धूप कभी छाँव कभी
जिंदगी का सफर यही
खाली हाथ आए हैं जाना है खाली हाथ,
फिर मनवा क्यों न दूर तू, माया जाल से !!

●

60. केतु छा गया

जाने कहाँ से हमारे इलाके में घुस आये,
और जल जमीन जंगल पर केतु छा गया।

तहस-नहस आँखों के सामने कई पेड़,
अजब -अनोखे निष्ठुर लोग कैसे आ गये।

ये छली आदिवासी भाषा,संस्कृति लुप्त करने पर तुले हुए
बेग़ैरत हरियाले खेतों को भरपेटू खा गये।

हमें भीख माँगने पर छोड़ने के लिए,
हमारी जमीन से, हमें ही बेदखल कर दिए!

कंक्रीट के बड़े-बड़े जंगल खड़े होते गये
जालिमों से त्रस्त कुछ, कूच कर गये शहर की ओर।

अब ये जंगल भी जंगल कहाँ रहे
चंद उद्योगपति की चपेट में आ गये।

विकट चलन में, कैसे दमन से बच पायें,
पूंजी के सामने, रोते हम मात खाये।

● ●

संक्षिप्त परिचय

डॉ.धीरजभाई वणकर

जन्मः 19 अगस्त, 1964 (गाँवः छभौव, जि.अरवल्ली)

शिक्षाः एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी. संस्कृत विशारद्

संप्रतिः अध्यक्ष हिन्दी विभाग, जी.एल.एस. कॉलेज फोर गर्ल्स, लाल दरवाजा, अहमदाबाद-1

प्रकाशित ग्रंथः कविता संग्रहः

1. अब चुप थोड़े रहेंगे – वर्ष-2015
2. तिल का ताड़ (हाइकु संग्रह) – वर्ष-2016
3. हौंसलो की उड़ान (का.सं.) – 2019
4. माणस जातनुं शुं ठेकाणुं – 2019
5. घुटन भरी जिंदगी (का.सं.) – 2022
6. संघर्ष के आदी (का.सं.) – 2022
7. शब्द तरंग (हाइकु संग्रह) – 2023

लघुकथा संग्रहः

1. खामोशी टूटने लगी 2023–

समीक्षात्मक ग्रंथः

1. मध्यकालीन एवं आधुनिक हिन्दी साहित्य –2009
2. कमलेश्वर का कहानी साहित्य और समाजाकि यथार्थ –2010
3. दलित विमर्श – 2012
4. हिन्दी-गुजराती दलित साहित्य के विविध संदर्भ – 2012
5. गुजराती दलित साहित्य के विविध संदर्भ – 2014
6. रेणु और कमलेश्वर की कहानियों में आंचलिकता – 2016
7. हिन्दी दलित एवं आदिवासी साहित्य अंतरंग पड़ताल – 2017
8. हिन्दी दलित आत्मकथा विमर्श – 2017
9. दलित साहित्य संदर्भः सिद्धांत और सृजन – 2019
10. अन्वीक्षा – गुजराती दलित साहित्य अकादमी –2023

अनुवादः

1. नया इतिहास) –अरविंद वेगड़ा की कविता– (2017
2. छद्मरूप – (प्रवीण गढ़वी की कहानियाँ) 2023
3. राधेश्याम शर्मा की प्रतिनिधि कहानियाँ – गुजरात साहित्य अकादमी गाँधीनगर 2023

संपादनः

1. भारतीय साहित्य एवं दलित चेतना – डॉ.धनंजय चौहाण के साथ –2010
2. आनंद मीमांसा –भाग-1, 2 –2015
3. केणवणी ना आधार स्तंभ – 2016
4. गुर्जर नारीनां नवलां रूप –2016
5. चंद्र श्रीमाली की प्रतिनिधि वार्ताएँ –2016
6. आदिवासीः संस्कृति और साहित्य –2019
7. किसान उपन्यासकार सूर्यदीन यादव –2021
8. आदिवासी साहित्य संवेदना और अस्मिता के स्वर – डॉ.अमित पटेल के साथ -2022
9. हिन्दी साहित्य के विविध आयाम और गुजरात –2022
10. कविता कल और आज–डॉ.सुरेश पटेल, डॉ.गोबर्धन बंजारा के साथ -2023
11. गद्य के विविध आयाम– डॉ.सुरेश पटेल, डॉ.गोबर्धन बंजारा के साथ- 2023
12. दस प्रतिनिधि एकांकी –2023
13. जमीन की उपज : सूर्यदीन यादव के उपन्यास-2024
14. विजय तिवारी का रचना संसार, फरवरी-2025

शोधलेखः

1. 150 से अधिक शोधलेख, स्तरीय राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित
2. 100 से अधिक लेख गुजराती भाषा में प्रकाशित
3. 100 राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में वक्ता, अध्यक्ष, शोधपत्र वाचन

पुरस्कार एवं सम्मानः

1. बी.ए. युनिवर्सिटी प्रथम – डॉ.ओमानंद सारस्वत गोल्डमेडल - दिसंबर-1987
2. डॉ. अंबेडकर फेलोशिप अवार्ड वर्ष-2009, भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली
3. महात्मा ज्योतिबा फुले फेलोशिप अवार्ड – भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली, वर्ष-दिसंबर-2010
4. "राष्ट्रभाषा गौरव" मानद उपाधि – अन्तर्राष्ट्रीय सम्मानोपाधि संस्थान, कुशीनगर- नवंबर-2010 (उत्तर प्रदेश)

5. 'काव्यरत्न' सम्मान - 'शाहिद कला सम्मान परिषद' – कप्तानगंज, कुशीनगर (उ.प्र.) – वर्ष-दिसंबर-2010
6. 'काव्यसम्राट' – मानद उपाधि – शाहिद कला सम्मान परिषद – कुशीनगर-वर्ष-फरवरी-2011
7. 'काव्य शिरोमणी' – शाहिद कला सम्मान परिषद – कुशीनगर (उ.प्र.)-जनवरी-2011
8. रवीन्द्रनाथ टैगोर लेखक पुरस्कार, महाराष्ट्र दलित साहित्य अकादमी, भुसावल-जनवरी-2011
9. पाँच किताबें गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी गांधीनगर द्वारा पुरस्कृत-वर्ष-2012, 2016, 2018
10. 'डॉ.महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान' – पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी – शिलांग-मेघालय-मई-2013
11. भारतरत्न डॉ.बी.आर.अंबेडकर टेलेन्ट रिसर्च अवार्ड – महात्मा फुले प्रतिभा संसोधन अकादमी, नागपुर-वर्ष-2013
12. हिन्दी साहित्य विभूषण-हिन्दी साहित्य मंडल, श्रीनाथद्वारा-14 सितंबर-2014
13. विशिष्ट साहित्यकार सम्मान – गुजरात अनु.जाति, अनु.जनजाति अध्यापक मंडल – वर्ष-2015
14. 'ज्ञानोदय साहित्य सेवा सम्मान'-2016 – ज्ञानोदय साहित्य संस्था, कर्नाटक-वर्ष-2016
15. हिन्दीतर हिन्दी भाषी लेखक पुरस्कार, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय – मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली-2016
16. समाजरत्न अवार्ड – परख फाउन्डेशन – लुणावाड़ा – 2017
17. नामदेव ढसाल राष्ट्रीय दलित साहित्य सम्मान-नागफनी पत्रिका – वर्ष-2020
18. नव सृजन कला प्रवीण अवार्ड – छत्रपति प्रशिक्षण संस्थान, कानपुर – 25 फरवरी-2021
19. 'सरस्वती सम्मान'2022-फरवरी – दि ग्राम टुडे प्रकाशन समूह –
20. 'सम्यक साहित्यरत्न सम्मान' – गुजराती दलित साहित्य अकादमी – -वर्ष – अहमदाबाद 2022
21. 'साहित्य सम्मान'-महिला बहुभाषी साहित्यिक मंच-अहमदाबाद – 2023
22. 'धानपाती सम्मान' – साहित्य परिवार पत्रिका – नडियाद – सितंबर-2023
23. साहित्य सेतु काव्य वैभव सम्मान – विश्व हिन्दी साहित्य संस्थान – गुजरात, 28 जनवरी, 2024

24. अचला अध्यापक सम्मान - फरवरी - 2025

विशेषः

1. पीएच.डी. शोध निर्देशक, गुजरात युनिवर्सिटी
2. दूरदर्शन केन्द्र अहमदाबाद पर व्याख्यान – मंच संचालन – वर्ष-2015
3. उपाध्यक्ष – हिन्दी साहित्य भारती गुजरात इकाई
4. उपाध्यक्ष – सम्यक साहित्य अध्यापक संघ, गुजरात
5. देश की कई यूनिवर्सिटी में पीएच.डी. बाह्य रेफरी

सदस्यः

1. हिन्दी अध्ययन समिति, गुजरात विश्वविद्यालय – वर्ष-2015 से 2018
2. हिन्दी अध्ययन समिति अध्यक्ष, गुजरात विश्वविद्यालय – वर्ष-2019-2021
3. हिन्दी अध्ययन समिति सदस्य– गुजरात विश्वविद्यालय – वर्ष-2021-2024
4. सदस्य अध्ययन समिति–सेन्ट झेवियर्स कॉलेज (स्वायत्त)2017-2025

संपादक मंडल सदस्यः

1. 'गुर्जर राष्ट्रवीणा' पत्रिका – गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति – अहमदाबाद
2. सम्यक पब्लिक भारत – उधमसिंह नगर – उत्तराखंड
3. बोधिसत्व बाबा साहेब टुडे – (मासिक) लखनऊ

परामर्शकः

1. हयाती (त्रैमासिक) गुजराती दलित साहित्य अकादमी – अहमदाबाद
2. डॉ.बाबा साहब आंबेडकर ओपन युनिवर्सिटी–हिन्दी साहित्य सामग्री सेम.-4

संरक्षकः

1. अंदनी उड़ान (त्रैमासिक) उदयपुर, राजस्थान

स्थायी पताः-

ए-63, स्वप्नसृष्टि सोसायटी, निरांत फ्लैट के पास,
निरांत चौराहा, वस्त्राल रोड, वस्त्राल,
अहमदाबाद-382418.
मोबाईलः 9638437011
ईमेलः dhirajvanker@gmail.com

● ● ●

This document was created with the Win2PDF “print to PDF” printer available at
http://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

http://www.win2pdf.com/purchase/

डॉ. धीरज वणकर

जन्म	:	19 अगस्त, 1964 (गाँव : छभौव, जि. अरवल्ली)
शिक्षा	:	एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी. संस्कृत विशारद्
संप्रति	:	अध्यक्ष हिन्दी विभाग, जी.एल.एस. कॉलेज फोर गर्ल्स, लाल दरवाजा, अहमदाबाद–1
प्रकाशन	:	**कविता संग्रह–** 1. अब चुप थोड़े रहेंगे (2015), 2. तिल का ताड़ (2016), 3. हौसलों की उड़ान (2019), 4. माणस जातनुं शुं ठेकाणुं (2019), 5. घुटर भरी जिंदगी (2022), 6. संघर्ष के आदी (2022), 7. शब्द तरंग (हाइकु संग्रह, 2023) **लघुकथा संग्रह–** 1. खामोशी टूटने लगी (2023)
अन्य	:	दर्जनों आलोचनात्मक ग्रंथ, तीन अनुवाद पुस्तकें, **संपादन**– दर्जनों सम्पादित पुस्तकें एवं 150 शोधालेख प्रकाशित
पुरस्कार	:	राष्ट्रीय / अंतरराष्ट्रीय स्तर के दो दर्जन पुरस्कार प्राप्त
विशेष	:	पीएच.डी. शोध निर्देशक, दूरदर्शन पर व्याख्यान, उपाध्यक्ष, हिन्दी साहित्य भारतीय गुजरात एवं सम्यक साहित्य अध्यापक संघ, गुजरात
सदस्य	:	पूर्व अध्यक्ष हिन्दी अध्ययन समिति, गुजरात विश्वविद्यालय विभिन्न पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का संपादन साथ ही परामर्शक गुजरात दलित साहित्य अकादमी एवं डॉ. बाबा साहब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, संरक्षक अंदनी उड़ान (त्रैमासिक) उदयपुर, राजस्थान
संपर्क	:	ए–63, स्वप्नसृष्टि सोसायटी, निरांत फ्लैट के पास, निरांत चौराहा, वस्त्राल रोड, वस्त्राल, अहमदाबाद–382418
मोबाइल	:	9638437011
ईमेल	:	dhirajvanker@gmail.com

उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
ए-685 कैनाल रोड, आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता कानपुर
Email : utkarshpublishersknp@gmail.com
Mob. : 8707662869

₹395/-
ISBN 978-93-48802-81-1